सांध्य दैनिक
4PM
जिद...सच की
www.4pm.co.in www.facebook.com/4pmnewsnetwork @Editor_SanjayS YouTube @4pm NEWS NETWORK
● वर्ष: 12 ● अंक 179 पृष्ठ: 8 ● लखनऊ, बुधवार 5 अगस्त, 2026
मूल्य ₹ 3/-

एक सच्चा आदमी किसी से नफरत नहीं करता।
-नेपोलियन बोनापार्ट

गिल की अगुवाई में श्रीलंका पहुंची... 7 | परीक्षा में गड़बड़ी की आहट भर... 3 | बांकीपुर में बीजेपी देखना चाहती... 2

उत्तर से दक्षिण तक सुलगती सियासत

दक्षिण की सियासत में स्टालिन की गिरफ्तारी पर हंगामा

» यूपी में यूरिया पर सियासत अखिलेश यादव का योगी सरकार पर वार

» सपा विधायक सचिन यादव को सीएम को पोस्टर दिखाना पड़ा भारी सत्र से निष्कासित

□□□ 4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। लगता है कि देश की राजनीति अब उस मोड़ पर पहुंच गई है जहां सदन से सड़क तक की लड़ाई अब विचारों की नहीं विरोध के तरीके और उस पर होने वाली कार्रवाई की बनती जा रही है।

क्या विपक्ष की हर आवाज को कानून व्यवस्था के चश्मे से देखा जा रहा है या फिर सरकारें केवल नियमों का पालन करा रही हैं। यह सवाल इसलिए भी उठ रहे हैं क्योंकि उत्तर से दक्षिण तक दो अलग अलग राज्यों में हुई घटनाओं ने लोकतंत्र विपक्ष की भूमिका और सत्ता के रवैये पर नयी बहस छेड़ दी है।

तमिलनाडु में स्टालिन यूपी में सचिन

दक्षिण में तमिलनाडु की राजनीति उबाल पर है। डीएमके नेता और विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष उदयनिधि स्टालिन की गिरफ्तारी के बाद उन्होंने आरोप लगाया कि सरकार ने किसानों के मुद्दों और अन्य वास्तविक समस्याओं से ध्यान हटाने के लिए उन्हें गिरफ्तार कराया। उन्होंने यह भी कहा कि उनके साथ आतंकवादियों जैसा व्यवहार किया गया। सरकार की ओर से कार्रवाई को कानूनी प्रक्रिया का हिस्सा बताया जा रहा है लेकिन विपक्ष इसे राजनीतिक प्रतिशोध के रूप में पेश कर रहा है। ऐसा ही कुछ यूपी में चल रहे विधानसभा सत्र में भी देखने को मिल रहा है जहां विपक्ष और सत्ता आमने सामने दिखाई दिए। समाजवादी पार्टी के विधायक सचिन यादव को सदन में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की तस्वीर दिखाकर विरोध करने पर पूरे सत्र के लिए निलंबित कर दिया गया। सत्ता पक्ष का तर्क है कि सदन की गरिमा बनाए रखना जरूरी है जबकि विपक्ष इसे लोकतांत्रिक विरोध की आवाज दबाने की कार्रवाई बता रहा है।

असल मुद्दों से ध्यान भटकाने के लिए सरकार ने मुझे गिरफ्तार कराया : उदयनिधि स्टालिन

तमिलनाडु विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष उदयनिधि स्टालिन ने पुलिस की गिरफ्त से रिहा होने के बाद मुख्यमंत्री सी. विजय जोसेफ पर हमला बोला है। उदयनिधि ने दावा किया है कि टीवीके सरकार ने असल मुद्दों से ध्यान भटकाने के लिए मुझे गिरफ्तार कराया और उनके साथ आतंकवादियों जैसा व्यवहार किया गया। उदयनिधि स्टालिन से तंजावुर जिले के सेंगिपट्टी पुलिस स्टेशन में पूछताछ की गई। पूछताछ के बाद देर रात उदयनिधि को बेल पर रिहा कर दिया गया। डीएमके नेता उदयनिधि स्टालिन ने एक्स पर पोस्ट में लिखा है कि किसानों की समस्याएं दूर करने में नाकाम सीएम सरकार असल मुद्दों से ध्यान भटकाने के लिए मुझे गिरफ्तार कर रही है। मुख्यमंत्री ने मेरे खिलाफ बदनामी फैलाने के लिए सत्ताधारी पार्टी का इस्तेमाल किया। उन्होंने आरोप लगाया कि तंजावुर विरोध प्रदर्शन के दौरान मैंने अभद्र भाषा का इस्तेमाल किया था। उन्होंने झूठे मामले दर्ज करवाकर और मुझे चेन्नई से तंजावुर के बीच बार-बार चक्कर लगवाकर किसी को खुश करने की कोशिश की है। उदयनिधि ने कहा कि अगर किसानों के लिए लड़ते हुए गिरफ्तार होना पड़े तो मैं एक बार नहीं बल्कि सौ बार गिरफ्तार होने को तैयार हूं। मैं किसानों की भलाई के लिए न सिर्फ 300 किलोमीटर बल्कि 3,000 किलोमीटर से भी ज्यादा पैदल मार्च करने को तैयार हूं। यह मुझे रोक नहीं पाएगा मैं उन नेताओं का शुक्रिया अदा करता हूं जिन्होंने मेरी गिरफ्तारी की निंदा की।

खाद के लिए कतार में किसान दोगुनी लाइन में लगकर भाजपा के खिलाफ वोट देंगे : अखिलेश यादव

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने गोंडा में खाद के लिए लंबी कतारों में खड़े किसानों का वीडियो साझा करते हुए भाजपा सरकार पर तीखा हमला बोला। उन्होंने दावा किया कि जिन किसानों को आज खाद के लिए लाइन में लगना पड़ रहा है वही अगले विधानसभा चुनाव में भाजपा के खिलाफ इससे भी लंबी कतार लगाकर उसे सत्ता से बाहर कर देंगे। अखिलेश यादव ने आरोप लगाया कि भ्रष्टाचार और कुप्रबंधन के कारण किसान परेशान हैं तथा कहा कि देश के सामने सबसे बड़ा संकट भाजपा है। सपा मुखिया अखिलेश यादव ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर एक वीडियो जारी करते हुए लिखा कि भरी बरसात में उप्र के गोंडा में खाद लेने के लिए लगी लाइन में लगे किसान कह रहे है कि अगले चुनाव में इससे दोगुनी लाइन लगेगी जिससे भाजपा हमेशा के लिए बाहर हो जाएगी। जब खेत मुस्कुराएगा तब देश मुस्कुराएगा। इसके पहले उन्होंने एक अन्य पोस्ट में लिखा कि भाजपाई भ्रष्टाचार का नाला जब तक बहता रहेगा कुछ भी नहीं बदलेगा। देश में सिर्फ एक संकट है और वह है भाजपा। भाजपा जाए तो सब सुधर जाए।

सिर्फ दो राज्यों की तस्वीर नहीं

इन घटनाओं को एक साथ देखने पर बहस सिर्फ दो राज्यों तक सीमित नहीं रहती। सवाल यह है कि क्या भारतीय लोकतंत्र में राजनीतिक असहमति का स्वर पहले से अधिक टकरावपूर्ण होता जा रहा है? क्या विपक्ष अपने विरोध को जनांदोलन का रूप देना चाहता है या सरकारें कानून और संस्थागत अनुशासन को प्राथमिकता दे रही हैं? इन सवालों के जवाब राजनीतिक दल अपने अपने नजरिए से दे रहे हैं। दिलचस्प बात यह है कि तमिलनाडु में यह सब ऐसे समय हो रहा है जब नई सरकार अपना पहला बजट पेश करने जा रही है। यानी विकास वित्तीय प्राथमिकताओं और शासन की चर्चा के समानांतर राजनीतिक टकराव भी सुर्खियों में है। उप्र में भी विस का सत्र और 27 की चुनावी तैयारियां राजनीतिक तापमान को लगातार बढ़ा रही हैं। ऐसे में यह सिर्फ दो राज्यों की कहानी नहीं रह जाती। यह उस बदलते राजनीतिक माहौल की कहानी है जहां सत्ता और विपक्ष के बीच हर टकराव अब केवल सदन की बहस नहीं बल्कि पूरे देश की बहस बनता जा रहा है। सवाल यही है कि क्या लोकतंत्र का तापमान बढ़ रहा है या राजनीति का पारा?

'सदन की गरिमा बनाए रखना जरूरी'

विधानसभा अध्यक्ष सतीश महाना ने सपा विधायक सचिन यादव के सत्र निष्कासन पर कहा है कि उनका व्यवहार बहुत दुर्भाग्यपूर्ण था। मैं उनकी सभी चिंताओं को सुनने के लिए पूरी तरह तैयार था। मैंने उन्हें हर मुद्दा उठाने के लिए कहने में लगभग दो घंटे बिताए। सदन की गरिमा और मर्यादा बनाए रखते हुए मैंने उनके सामने हाथ भी जोड़े। अगर कोई अपनी बात नहीं रखना चाहता विधानसभा सत्ता पक्ष और विपक्ष दोनों के सहयोग से चलती है। विपक्ष सहयोग नहीं करेगा तो विधानसभा नहीं चल पाएगी। उन्होंने कहा कि अगर विपक्ष के पास मुद्दा हो तो उस पर चर्चा की जा सकती है। सिर्फ शोर शराबा करने से सदन नहीं चल सकता है। दो घंटे से अधिक समय तक मैंने लगातार बहुत प्रयास किए। इसके बावजूद मैं चाहता हूं कि विधानसभा का सत्र अच्छे तरीके से चले। विधानसभा सत्र से निष्कासित सपा विधायक सचिन यादव को लेकर स्पीकर सतीश महाना ने कहा कि मुझे उम्मीद थी कि सचिन यादव एक पढ़े-लिखे व्यक्ति होने के नाते कई अन्य सम्मानित विधायकों की तुलना में बेहतर व्यवहार करेंगे। लेकिन मुझे बहुत निराशा हुई। उन्होंने अपनी बात दोहराते हुए कहा कि सचिन यादव जैसे विधायक से मैं ऐसी अपेक्षा नहीं करता था। उनके आचरण से मुझे आत्मग्लानी हुई कि मेरी जो उपेक्षाएं थीं उनका आचरण बिल्कुल विपरीत था।

बांकीपुर में बीजेपी देखना चाहती थी बिना बेईमानी के कितने वोट मिलते हैं : अखिलेश

» सपा प्रमुख भारतीय जनता पार्टी की हार पर खुलकर बोले

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने बांकीपुर विधानसभा सीट पर उपचुनाव में भारतीय जनता पार्टी की हार पर खुलकर अपनी बात रखी। अखिलेश ने तंजिया लहजे में कहा कि यह बीजेपी की हार नहीं है। उन्होंने कहा कि बीजेपी अगर कुंदरकी या बंगाल की तरह लड़ती तो हार नहीं होती। बीजेपी बिना बेईमानी किए यह देखना चाहती थी कि उसके कितना वोट मिलता है। बीजेपी यह देखना चाहती थी कि बिना ईवीएम हैक किए उसे जनता कितना वोट देगी।

कन्नौज सांसद ने कहा कि उन्होंने अपना तय किया है कि बिना बेईमानी के जनता कितना वोट देगी। उन्होंने कहा कि बीजेपी ने बिल्कुल फेयर चुनाव कराया इस बार, पुलिस प्रशासन नहीं लगाया जिस तरह से उन्होंने कुंदरकी, मीरापुर, रामपुर के उपचुनाव में लगाया था। वह चेक कर रहे थे कि कितनी जनता में नाराजगी है।

12 सालों में बीजेपी को जनता की तरफ से मिला रिटर्न गिफ्ट

अखिलेश ने यह भी कहा कि बांकीपुर उपचुनाव के नतीजों पर समाजवादी पार्टी के प्रमुख अखिलेश यादव ने कहा, यह पिछले 12 सालों में बीजेपी को जनता की तरफ से मिला रिटर्न गिफ्ट है।

सपा चीफ ने कहा कि आप बीजेपी से क्यों नहीं पूछते हो कि हनुमान जी कहां नाच रहे थे। दान पात्र में ताला तो ऊपर है लेकिन नीचे सुरंग है।

बांकीपुर और दतिया के रिजल्ट का यूपी में पड़ेगा असर : डिंपल

पटना की बांकीपुर और मध्य प्रदेश की दतिया में उपचुनाव नतीजों पर समाजवादी पार्टी की नेता और मैनपुरी से सांसद डिंपल यादव ने बड़ा दावा किया है। उन्होंने कहा है कि यह नतीजा बहुत अच्छा है. यूपी चुनाव के संदर्भ में डिंपल ने कहा कि हालांकि उपचुनाव के मुकाबले अगर उत्तर प्रदेश में विधानसभा चुनाव की बात करें तो हालात अलग हो सकते हैं। सपा नेता ने कहा कि ऐसे अच्छे हालात बन सकते हैं. लेकिन एक पार्टी के तौर पर हम पूरी तरह तैयार हैं। इससे पता चलता है कि लोगों में कितना गुस्सा है और वे सरकार से कितने नाखुश हैं।

सांसद ने उठाए जनता से जुड़े मुद्दे

समाजवादी पार्टी की सांसद डिंपल यादव ने जनता की भावनाओं से जुड़े मुद्दे उठाए। उन्होंने कहा कि लोगों की आजीविका से संबंधित मुद्दों को सदन में उठाया जाएगा। डिंपल यादव ने ईंधन पर चिंता व्यक्त की। उनके अनुसार, यह ईंधन इंजन को नुकसान पहुंचा रहा है और गाड़ियों की ईंधन खपत पर भी असर डाल रहा है। उन्होंने सरकार पर इस मामले में कोई स्पष्ट गाइडलाइन जारी न करने का आरोप लगाया।

बांसुरी स्वराज को कानून की समझ नहीं : पप्पू यादव

» बोले सांसद, उनका जन्म राहुल गांधी के खिलाफ केस लड़ने को हुआ

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। निर्दलीय सांसद पप्पू यादव ने भाजपा सांसद बांसुरी स्वराज पर को घेरा । उन्होंने कहा कि बांसुरी स्वराज का जन्म राहुल गांधी के खिलाफ केस करने के लिए हुआ है।

पप्पू यादव ने यह भी कहा कि उन्हें कानून की कोई समझ नहीं है। उनके अनुसार, बांसुरी स्वराज को सदन में स्पीकर से पहले इजाजत लेनी चाहिए। पप्पू यादव ने स्पष्ट किया कि वह हिंसा में विश्वास नहीं करते हैं। उन्होंने बताया कि प्रयागराज कोर्ट ने इस मामले पर संज्ञान लिया है और उन्हें नोटिस भेजा है, जिसका वह जवाब देंगे। राहुल गांधी, मल्लिकार्जुन खरगे और प्रियंका गांधी वाड्रा सहित अन्य विपक्षी सांसदों ने मार्च किया। उन्होंने प्रेरणा स्थल पर गांधी प्रतिमा से मकर द्वार तक विरोध मार्च निकाला। यह मार्च केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के खिलाफ था।

सम्राट चौधरी की नकारात्मक राजनीति का परिणाम है बीजेपी की हार: तेजस्वी यादव

» नेता प्रतिपक्ष बोले- सीएम राज्य चलाने में पूरी तरह विफल रहे

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। राष्ट्रीय जनता दल (राजद) के नेता तेजस्वी यादव ने बिहार में सत्तारूढ़ राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) पर तीखा हमला करते हुए कहा कि बांकीपुर विधानसभा उपचुनाव में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की करारी हार मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी की नकारात्मक राजनीति का परिणाम है।

विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव ने कहा, सम्राट चौधरी के मुख्यमंत्री बनने के बाद पिछले 150 दिन में भाजपा राज्य में दो चुनाव हार चुकी है। पहले विधान परिषद चुनाव और अब बांकीपुर विधानसभा उपचुनाव। उन्होंने आरोप लगाया, सम्राट चौधरी राज्य चलाने में पूरी तरह विफल रहे हैं। इसके अलावा राज्य में कानून-व्यवस्था पूरी तरह ध्वस्त हो चुकी है। तेजस्वी ने कहा, हम बांकीपुर के जनादेश को स्वीकार करते हैं। यह जनादेश भाजपा नीत राजग और मुख्यमंत्री के खिलाफ है। जन सुराज पार्टी के संस्थापक प्रशांत किशोर ने सोमवार को बांकीपुर विधानसभा सीट पर जीत दर्ज

की। यह सीट भाजपा का गढ़ मानी जाती थी, जिस पर पार्टी 1995 के बाद से कभी नहीं हारी थी। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नवीन के अप्रैल में राज्यसभा के लिए निर्वाचित होने और विधानसभा सदस्यता से इस्तीफा देने के कारण रिक्त हुई बांकीपुर विधानसभा सीट पर उपचुनाव कराया गया था। अपने पहले ही चुनाव में किशोर ने 64,151 मत हासिल किए और भाजपा के उम्मीदवार नीरज कुमार सिन्हा को 19,324 मतों के अंतर से पराजित किया। भाजपा के प्रति जनता का गुस्सा साफ दिखाई दे रहा है। बताइए, मुख्यमंत्री ने 150 दिनों में एक भी बड़ा रचनात्मक काम किया है? इस बीच, डेहरी-डलमियानगर नगर परिषद के कार्यपालक पदाधिकारी (ईओ) विमल कुमार की हाल में हुई मौत का मुद्दा उठाते हुए यादव ने आरोप लगाया कि पुलिस मामले की सही तरीके से जांच नहीं कर रही है तथा मुख्यमंत्री और राज्य सरकार इस मामले में स्थानीय विधायक को संरक्षण दे रही है। उन्होंने कहा, मृत अधिकारी के परिजन निष्पक्ष जांच की मांग को लेकर मुख्यमंत्री से मिलना चाहते थे, लेकिन मुख्यमंत्री के पास उनसे मिलने का समय नहीं था। इस मामले में स्थानीय विधायक की भूमिका की पुलिस जांच होनी चाहिए, क्योंकि वह 'रंगदारी' में लिप्त हैं। सरकार अपराधियों को संरक्षण दे रही है। राज्य में कानून-व्यवस्था पूरी तरह ध्वस्त हो चुकी है। विमल कुमार का शव एक अगस्त को बिहार के औरंगाबाद जिले में मिला था। अधिकारी स्थानीय जनप्रतिनिधि की कथित रंगदारी का शिकार हुए। मुख्यमंत्री इस मुद्दे पर चुप्पी क्यों साधे हुए हैं? मैं मृत अधिकारी के परिजनों को सुरक्षा और उनकी पत्नी को सरकारी नौकरी देने की मांग करता हूं।

भाजपा को छोड़कर किसी के साथ भी मिलकर लड़ेंगे: चंद्रशेखर आजाद

विधानसभा चुनाव 27 की तैयारियों में जुटी आजाद समाज पार्टी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। आजाद समाज पार्टी (कांशीराम) के अध्यक्ष चंद्रशेखर आजाद ने आगामी उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव 27 की तैयारियों के बीच अपनी रणनीति साफ कर दी है। उन्होंने कहा कि भारतीय जनता पार्टी को छोड़कर अगर कोई दल उनके साथ मिलकर चुनाव लड़ना चाहता है तो उसका स्वागत है। ऐसे में समाजवादी पार्टी और अखिलेश यादव के साथ संभावित गठबंधन को लेकर भी राजनीतिक चर्चाएं तेज हो गई हैं।

नगीना सांसद चंद्रशेखर आजाद ने अखिलेश यादव के साथ मिलकर चुनाव लड़ने की संभावना पर कहा कि वह किसी के लिए अपने दरवाजे बंद नहीं कर रहे हैं। उन्होंने कहा, मैं किसी को मना नहीं कर रहा हूं. अगर कोई हमारे साथ मिलकर चुनाव लड़ना चाहता है तो उसका स्वागत है. लेकिन बीजेपी से हमारा वैचारिक विरोध है, इसलिए उसे छोड़कर जो भी साथ आना चाहे, उसका स्वागत है। उनके इस बयान को समाजवादी पार्टी के लिए खुले संदेश के तौर पर देखा जा रहा है। चंद्रशेखर आजाद ने कहा कि 22 के विधानसभा चुनाव में उनकी जमानत जब्त हो गई थी, जिसे वह अपना राजनीतिक अपमान मानते हैं, हालांकि उन्होंने कहा कि उस हार से उन्होंने हार नहीं मानी। उनके मुताबिक, गिरना और

फिर उठकर आगे बढ़ना राजनीति का हिस्सा है. इसी सोच के साथ उन्होंने दोबारा मेहनत की और 24 में चुनावी मैदान में उतरकर जीत हासिल की। चंद्रशेखर आजाद ने बताया कि उनकी पार्टी ने उत्तर प्रदेश में चुनावी तैयारियां तेज कर दी हैं। 45 प्रभारियों की सूची जारी की जा चुकी है और बूथ स्तर तक संगठन को मजबूत किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि पार्टी जनता के मुद्दों को लेकर लगातार काम कर रही है और उन्हें अपनी मेहनत के साथ-साथ जनता के समर्थन पर पूरा भरोसा है। ऐसे में आने वाले समय में विपक्षी दलों के बीच संभावित गठबंधन को लेकर चंद्रशेखर आजाद की भूमिका अहम मानी जा रही है।

चढ़ावा चोरी मामले पर चर्चा नहीं चाहती योगी सरकार : मोना

» नेता विधानमंडल दल कांग्रेस ने भाजपा को घेरा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। उत्तर प्रदेश विधानसभा के मानसून सत्र के में कांग्रेस ने श्रीराम जन्मभूमि मंदिर में श्रद्धालुओं द्वारा दिए गए दान और चढ़ावे की चोरी के मुद्दे पर चर्चा की मांग की, कांग्रेस विधानमंडल दल नेता आराधना मिश्रा मोना ने भाजपा योगी आदित्यनाथ सरकार पर भगवान रामलला मंदिर में हुई चढ़ावे की लूट पर चर्चा से भागने का आरोप लगाते हुए, चंदे चढ़ावे की संगठित और

सुनियोजित लूट और डकैती बताया ।

कांग्रेस विधान मंडल दल की नेता श्रीमती आराधना मिश्रा मोना ने कहा कि बीजेपी योगी आदित्यनाथ सरकार के लिए भगवान राम सिर्फ राजनीतिक मुद्दा भर हैं, भगवान रामलला मंदिर में इतनी बड़ी चंदे की चढ़ावे की संगठित लूट और डकैती चलती रही, लेकिन सरकार इतने महत्वपूर्ण संवेदनशील विषय जो देशभर के श्रद्धालुओं की आस्था से जुड़ा है उसकी चर्चा से भाग रही, आज विपक्ष मांग करता रहा कि इस पर चर्चा हो लेकिन सरकार हिम्मत नही जुटा पाई भगवान राम से जुड़े इस महत्वपूर्ण विषय पर।

श्रीमती आराधना मिश्रा मोना ने कहा कि योगी आदित्यनाथ सरकार दावा करती है की लूट चोरी और डकैती में कमी आई है लेकिन आम जनता से हो रही लूट के साथ साथ अब जनता की आस्था ,श्रद्धा और विश्वास को भी लूटा गया, भगवान रामलला के मंदिर निर्माण में संपूर्ण भारत के साथ विश्व भर से श्रद्धालुओं ने दान और चंदा दिया,गरीब ने अपनी मेहनत की कमाई से भगवान राम लाल के मंदिर में सहयोग किया, किसानों ने ने अपनी बचत से, मजदूर ने अपनी मजदूरी से और महिलाओं ने तो अपने गहने तक भगवान रामलला के मंदिर में निर्माण में दिए, यह इस देश के श्रद्धालुओं की भगवान रामलला के प्रति आस्था और विश्वास को दिखाता है, लेकिन भाजपा सरकार में उस आस्था और विश्वास को छला गया।

परीक्षा में गड़बड़ी की आहट भर से छात्र मुखर

सबकी प्रेरणा बन रहा जंतर-मंतर

देश के हर परीक्षा पर अभ्यर्थियों की नजर

- झारखंड में लोकसेवा आयोग परीक्षा की धांधली को लेकर प्रदर्शन
- कर्नाटक पुलिस कॉन्स्टेबल परीक्षा में हंगामा
- पंजाब में फार्मेसी पेपर विवाद पर बवाल

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। जबसे दिल्ली में नीट पेपर लीक मामले में छात्रों के आंदोलन के बाद केंद्र सरकार बैकफुट पर आई है तब से कई राज्यों में भी अब छात्र का प्रदर्शन मुखर होने लगा है। इन छात्रों को सीजेपी का साथ तो मिल ही रहा है अन्य पार्टियां भी बिना देरी किए इनके पक्ष में उतरने लगी हैं। झारखंड, पंजाब से लेकर कर्नाटक में परीक्षाओं के धांधली के खिलाफ आवाज उठने लगी है।

झारखंड की राजधानी रांची में तो जंतर-मंतर जैसा नजारा देखने को मिला। छठे दिन भी जेपीएससी व जेएसएससी के अभ्यर्थी,डटे रहे। बारिश के बीच छात्र नेता की अनिश्चितकालीन भूख हड़ताल बैठें हैं। झारखंड लोक सेवा आयोग (जेपीएससी) और झारखंड कर्मचारी चयन आयोग (जेएसएससी) की परीक्षाओं में कथित धांधली और पेपर लीक के खिलाफ शुरू हुआ आंदोलन अब एक बड़े जन-आंदोलन का रूप ले चुका है। सोमवार को अभ्यर्थियों का यह विरोध प्रदर्शन छठे दिन में प्रवेश कर गया। रांची का जयपाल सिंह मुंडा स्टेडियम अब दिल्ली के ऐतिहासिक जंतर-मंतर की तर्ज पर आंदोलित नजर आ रहा है, जहाँ सैकड़ों छात्र तिरंगा लहराते हुए राज्य सरकार के खिलाफ नारेबाजी कर रहे हैं। इस प्रदर्शन को कॉकरोच जनता पार्टी का भी समर्थन मिल चुका है।

सीजेपी पूरी मजबूती के साथ झारखंड के सभी छात्रों के साथ खड़ी : दिपके

देश भर में छात्रों के मुद्दों पर मुखर रहने वाली सीजेपी के संस्थापक अभिजीत दिपके ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा, मैंने झारखंड में जेपीएससी और जेएसएससी भर्ती परीक्षाओं में हुई गड़बड़ियों के खिलाफ आवाज उठा रहे अभ्यर्थियों से बात की है। सीजेपी पूरी मजबूती के साथ झारखंड के सभी छात्रों के साथ खड़ी है और उनकी जायज मांगों का समर्थन करती है।

सोनम वांगचुक की तर्ज पर छात्र नेता का अनशन

बापू वाटिका से शुरू हुआ यह आंदोलन अब विशाल रूप ले चुका है। जिस तरह शिक्षा प्रणाली में सुधारों को लेकर सोनम वांगचुक ने 26 दिनों तक भूख हड़ताल की थी, उसी तर्ज पर छात्र नेता देवेंद्र नाथ महतो अनिश्चितकालीन अनशन पर बैठ गए हैं। वे इस आंदोलन का प्रमुख चेहरा बनकर उभरे हैं और उनकी स्पष्ट मांग है कि कथित गड़बड़ियों के कारण 14वीं परीक्षा को तत्काल प्रभाव से रद्द किया जाए। छात्रों के गुस्से और चल रही भूख हड़ताल के अलावा, जयपाल सिंह मुंडा स्टेडियम में आकर्षक नारे गूंज रहे थे, जो दिल्ली के जंतर-मंतर पर हुए विरोध प्रदर्शनों के दौरान सुने गए नारों की याद दिलाते थे।

खराब मौसम के बावजूद भी डटे

जब वे प्रदर्शनकारियों में से एक के पास पहुँचे और पूछा कि भारी बारिश और बिजली कड़कने जैसे खराब मौसम के बावजूद वे कैसे डटे हुए हैं, तो प्रदर्शनकारी ने कहा, बारिश के मौसम में झारखंड के आसमान पर भले ही मॉनसून के बादल छाए हों, लेकिन भ्रष्टाचार के काले बादलों ने राज्य के छात्रों के भविष्य पर साया डाल दिया है। हमारा आंदोलन तब तक जारी रहेगा जब तक ये बादल छंट नहीं जाते। तक सरकार की अंतरात्मा नहीं जाग जाती, तब तक वे सोएंगे नहीं। उन्होंने कहा, अब हम सरकार को जगाने के लिए खुद जाग रहे हैं।

अधिकारियों ने उम्मीदवारों को समझाया प्रक्रिया

जिला अधिकारियों ने कहा कि कुछ अन्य परीक्षा केंद्रों पर भी ऐसी ही उलझन की सूचना मिली थी, लेकिन अधिकारियों द्वारा प्रक्रिया समझाने के बाद उम्मीदवारों ने परीक्षा फिर से शुरू कर दी। हालाँकि, टिकोटा केंद्र पर कुछ उम्मीदवार असंतुष्ट रहे और परिसर से चले ।अधिकारियों ने बताया कि बाद में उम्मीदवारों ने परीक्षा हॉल में दोबारा प्रवेश करने की अनुमति मांगी, लेकिन उनकी मांग अस्वीकार कर दी गई क्योंकि परीक्षा के नियमों के अनुसार, प्रक्रिया की निष्पक्षता और सुरक्षा बनाए रखने के लिए केंद्र छोड़ने के बाद उम्मीदवारों को वापस आने की अनुमति नहीं होती है। अधिकारियों के अनुसार, केंद्र से बाहर गए कुछ उम्मीदवारों ने कथित तौर पर बाहर हंगामा किया और गेट को धक्का देकर अंदर घुसने की कोशिश की। अधिकारियों ने बताया कि पुलिस ने हस्तक्षेप किया और कम से कम बल का प्रयोग करके स्थिति को नियंत्रण में किया। इतनी गड़बड़ी के बावजूद, सेंटर के अंदर मौजूद 100 से ज़्यादा उम्मीदवारों ने परीक्षा पूरी की। केईए कन्फ्यूजन की वजह से हुई देरी की भरपाई के लिए अतिरिक्त समय भी दिया।

पंजाब में कांग्रेस नेताओं ने की नारेबाजी, मांगा हरजोत बैंस का इस्तीफा

पंजाब विधानसभा के मानसून सत्र के पहले दिन फार्मेसी पेपर लीक पर हंगामा हो गया। कांग्रेस विधायकों ने फार्मेसी नकल मामले में शिक्षा मंत्री हरजोत बैंस और स्वास्थ्य मंत्री डॉ. बलबीर सिंह का इस्तीफा मांगा। नेता प्रतिपक्ष प्रताप बाजवा ने पेपर लीक का आरोप लगाते हुए नारेबाजी की। कांग्रेस विधायक काले परने पहनकर सदन में पहुंचे। स्पीकर ने खड़े होकर कांग्रेस विधायकों को समझाया, इसके बावजूद कांग्रेस विधायकों का प्रदर्शन जारी है। स्पीकर ने कार्रवाई की चेतावनी भी दी। जिसके बाद सदन को साढ़े 12 बजे के लिए स्थगित कर दिया गया। कार्यवाही दोबारा शुरू होने पर कैबिनेट मंत्री अमन अरोड़ा ने कहा कि कांग्रेस के इतने वरिष्ठ विधायक हैं लेकिन उन्हें यह नहीं पता है कि विभाग का मंत्री कौन हैं। उन्होंने सरकार से अपील की कि इस तरह के बर्ताव के लिए कांग्रेस विधायकों को समझाया जाए। इससे पहले विधानसभा में नीट परीक्षा लीक के बाद जान गंवाने वाले बच्चों को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। स्पीकर ने कहा कि केंद्र सरकार को अपना सिस्टम और मजबूत करना चाहिए ताकि बच्चों को इस तरह जान न गंवानी पड़े।

कर्नाटक में छात्रों का वॉकआउट, लाठीचार्ज के बाद केईए ने जारी की सफाई

कर्नाटक के विजयपुरा जिले के टिकोटा शहर स्थित श्री शारदंबा पीयू कॉलेज परीक्षा केंद्र पर उस समय भारी तनाव फैल गया, जब सिविल पुलिस कॉन्स्टेबल भर्ती परीक्षा के दौरान उम्मीदवारों ने प्रश्न पत्र और OMR शीट के सीरियल नंबर अलग होने पर हंगामा कर दिया। भ्रम की स्थिति के कारण कई उम्मीदवार परीक्षा हॉल छोड़कर बाहर चले गए, जिसके बाद परिसर में काफी बवाल हुआ। कर्नाटक परीक्षा प्राधिकरण (केईए) के अनुसार, सुबह 9:30 बजे की परीक्षा के लिए प्रश्न पत्र और OMR उत्तर पुस्तिकाएं नियमानुसार बांटी गईं। हालांकि, कुछ उम्मीदवारों ने दावा किया कि OMR शीट का सीरियल नंबर प्रश्न पत्र के नंबर से मेल नहीं खा रहा था। इसे परीक्षा में धांधली या गड़बड़ी मानकर अभ्यर्थियों ने परीक्षा देने से इनकार कर दिया और हॉल से बाहर निकल आए। केंद्र पर्यवेक्षकों ने स्पष्ट किया कि के ईए के नियमों (एसओपी) के मुताबिक, OMR शीट और प्रश्न पत्र का सीरियल नंबर समान होना आवश्यक नहीं है। अभ्यर्थियों को केवल ओएमआर पर प्रश्न पत्र सीरीज कोड, वर्जन कोड और अपना पंजीकरण नंबर सही भरना होता है।

सोशल मीडिया पर फैली गलत जानकारी : केईए

घटना के बाद जारी एक स्पष्टीकरण में, केईए ने कहा कि सोशल मीडिया पर फैली गलत जानकारी की वजह से कुछ उम्मीदवारों को लगा कि OMR आंसर शीट नंबर और क्वेश्चन पेपर नंबर का मेल होना जरूरी है। कर्नाटक एग्जामिनेशन्स अथॉरिटी के एग्जक्यूटिव डायरेक्टर ने बाद में साफ किया कि आधिकारिक नोटिफिकेशन, इंस्ट्रक्शन बुकलेट या जुबानी निर्देशों में कहीं भी यह नहीं कहा गया था कि OMR नंबर और क्वेश्चन पेपर नंबर एक ही होने चाहिए। OMR आंसर शीट में क्वेश्चन पेपर सीरीज कोड और वर्जन कोड भरने का प्रावधान है। लोगों से अपील की कि वे सोशल मीडिया पर परीक्षा प्रक्रिया के बारे में गलत या गुमराह करने वाली जानकारी न फैलाएं।

छात्रों ने ये कहा

पुलिस कॉन्स्टेबल परीक्षा में शामिल होने वाले एक छात्र ने कहा, आज हमारे साथ जो अन्याय हुआ है, उसके लिए हम मुख्यमंत्री डीके शिवकुमार और राज्य के गृह मंत्री प्रियांक खरगे से न्याय की मांग कर रहे हैं। हमें बहुत बड़ा झटका लगा है। 99 प्रतिशत छात्रों ने परीक्षा नहीं दी... हमें सुबह 9.30 या 10 बजे क्वेश्चन पेपर और ओएमआर शीट मिलनी चाहिए थी, लेकिन वे हमें सुबह 11.0 बजे दिए गए। हमने DC और SP से संपर्क किया, लेकिन किसी ने हमें जवाब नहीं दिया या हमसे बात तक नहीं की। हमारे साथ गलत हुआ है। हमें लिखित परीक्षा दोबारा देने की इजाजत मिलनी चाहिए। इसीलिए हमने आज परीक्षा नहीं दी... अगर न्याय नहीं मिला, तो हम आत्महत्या कर लेंगे।

जिद... सच की

Sanjay Sharma

editor.sanjaysharma

@Editor_Sanjay

ग्रामीणों के लिए रोजगार बढ़ाने पर देना होगा जोर

> चिंता इस बात की भी कि आय में गिरावट या यथास्थिति के बावजूद परिवारों का खर्च कम नहीं हो रहा। महंगाई से दोहरी मार पड़ी है। नतीजतन उधारी से काम चलाने की मजबूरी हो रही है। यह उधारी भी अनौपचारिक कर्ज के रूप में है जो वित्तीय संस्थानों के बजाय दोस्तों व रिश्तेदारों से ली जा रही है।

देश में बेरोजगारी की दर बढ़ी है। खास तौर से गांवों में कृषि क्षेत्र में अब सरकारों को कृषि के साथ-साथ गैर कृषि क्षेत्रों में रोजगार बढ़ाना होगा तभी संकट दूर होगा। ग्रामीण परिवारों की आय को लेकर नाबार्ड के ताजा सर्वे के आंकड़े खासतौर से ग्रामीण भारत की सेहत को लेकर चिंता बढ़ाने वाले हैं। नाबार्ड का यह सर्वे 29 राज्यों के बीस हजार ग्रामीण परिवारों पर आधारित भले ही हो लेकिन ग्रामीण भारत की आर्थिक सेहत की चौंकाने वाली तस्वीर पेश करता है। सर्वे में कहा गया है कि ग्रामीण परिवारों की आय में सुधार की रफ्तार पिछले दो वर्षों के सबसे कमजोर स्तर पर पहुंच गई है। ग्रामीण क्षेत्रों में आय बढने की बात कहने वाले परिवारों की हिस्सेदारी महज 27.7 फीसदी ही है। चिंता इस बात की भी कि आय में गिरावट या यथास्थिति के बावजूद परिवारों का खर्च कम नहीं हो रहा। महंगाई से दोहरी मार पड़ी है। नतीजतन उधारी से काम चलाने की मजबूरी हो रही है। यह उधारी भी अनौपचारिक कर्ज के रूप में है जो वित्तीय संस्थानों के बजाय दोस्तों व रिश्तेदारों से ली जा रही है।

अनौपचारिक कर्ज पर निर्भरता रेकॉर्ड स्तर पर पहुंचना ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर बढ़ते दबाव का सूचक है। देखा जाए तो भारतीय ग्रामीण अर्थव्यवस्था मौजूदा दौर में दोहरी चुनौती का सामना कर रही है। एक तरफ दक्षिण-पश्चिम मानसून के इस बार कमजोर रहने के संकेत मिल रहे हैं वहीं दूसरी ओर वैश्विक युद्ध के परिदृश्य के कारण कृषि आदानों की लागत भी बढ़ रही है। मानसून समय पर नहीं पहुंचने से कृषि क्षेत्र पर सदैव दबाव बढ़ता है। चिंता इस बात की भी है कि यदि मानसून कमजोर रहा तो फसलों के उत्पादन पर भी इसका असर पडना तय है। सीधे-सीधे यह चक्र अंतत: किसानों की आय को ही प्रभावित करने वाला होगा। वहीं खाद्य वस्तुओं की पहले से ही बढ़ती कीमतों में और इजाफा हो सकता है। महंगाई का असर ग्रामीण क्षेत्र में कृषि आधारित उत्पादों की मांग पर भी पड़ेगा। चिंता की बात यह है कि ग्रामीण परिवारों की अब आय नहीं बल्कि कर्ज बढ़ता जा रहा है। रोजगार के अवसर और आय समान रूप से बढ़े तो एक हद तक ठीक रहता है लेकिन आय में वृद्धि की रफ्तार कमजोर हो और रोजमर्रा का खर्च बढ़ता जाए तो निवेश की तो सोच संभव ही नहीं है। कृषि क्षेत्र पर अत्यधिक निर्भरता भी आय के अवसरों में कमी लाने वाली रहती आई है। शहरी क्षेत्रों में भी महंगाई की वजह से फिर से ग्रामीण क्षेत्र में आने वालों की संख्या बढ़ती है तो कृषि पर ही निर्भरता रखना काफी नहीं होगा।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

संपादक को पत्र...

सर, मैंने कई तरह के अखबार पढ़े हैं, लेकिन आपका अखबार एकदम अलग लगा। आपका अखबार हर खबर की तह तक जाता है जो बहुत ही अलग बात है इस अखबार की। इसमें आप हर बात को बड़ी सच्चाई के साथ पेश करते हैं। आपके अखबार का नाम भी अलग है। वाकई **4PM** से हमेशा अलग खबरें ही मिलती हैं हर रोज। साथ ही इस **4PM** कॉम्पेक्ट होने के कारण कहीं भी आसानी से पढ़ सकते हैं। इस 8 पेज के अखबार में सभी चीजें मिल जाती हैं जैसे एक बड़े अखबार में जैसे अजब-गजब, ट्विट, व चुटकुले के साथ कहानियां कुल मिलाकर गंभीर खबरों के साथ रोचक भी है आपका अखबार।

सचिन यादव , खरगापुर

सर, मैंने पहले कभी इस अखबार के बारे में नहीं सुना था। मगर जब इसके बारे में जाना तो मुझे व्यक्तिगत तौर पर यह अखबार सबसे उम्दा लगा। सबसे अलग तरह की खबरें मिलती है **4PM** में। खासकर अखबार की जो लिखने की शैली है वो सभी और अखबारों से एकदम जुदा है। साथ ही सभी खबरों की हेडलाइन काफी आकर्षक होती हैं। आपके अबखार का जो स्लोगन है जिद सच की वह आपकी खबर के हिसाब से एकदम सटीक हैं। आपका अखबार एकदम सच्ची खबरे प्रकाशित करता हैं। बिना किसी के डर के। ऐसे अखबार को मेरा सलाम।

विकास मिश्रा, आशियाना, लखनऊ

सर, मैंने अखबार को कई बार मंगाकर पढ़ा है। वर्तमान मै आपके यूट्यूब चैनल को सुनता हूं। आपके समाचार पढ़ने के तरीके का मै कायल हूं। इसम आप उन मुद्दो को उठाते हैं जिन्हे मेन मीडिया नजरअंदाज कर देता है। आपके अखबार की तरह इसमें भी सता से सवाल पूछा जाता है जो बहुत सराहनीय है। अखबार की जो लिखने की शैली है वो सभी और अखबारों से एकदम जुदा है। साथ ही सभी खबरों की हेडलाइन काफी आकर्षक होती हैं।

जाकिर खान, चौक, लखनऊ

एक मीम ने बिगाड़ा खेल : मोदी सरकार को करारा झटका

जॉयोजीत पाल, प्रोफेसर, यूनिवर्सिटी ऑफ मिशिगन

मीडिया पर कंट्रोल के बावजूद, जानकारी का माहौल अचानक बदल गया, और सरकार ने लंबे समय से उस एक प्लेटफॉर्म पर रोक लगा रखी थी जहां उसे चेतावनी के संकेत मिल सकते थे। 24 जुलाई को पुणे में एक विरोध प्रदर्शन के दौरान बीजेपी के कमल के निशान का मजाक उड़ाता एक पोस्टर। इसी तरह इतिहास में 21 दिसंबर, 1989 की इस तस्वीर में, एक टेलीविजन स्क्रीन पर रोमानिया के पूर्व कम्युनिस्ट तानाशाह निकोले चाउसेस्कु को बुखारेस्ट में रोमानियाई कम्युनिस्ट पार्टी के मुख्यालय की बालकनी से अपना आखिरी सार्वजनिक भाषण देते हुए दिखाया गया है। उनकी पत्नी, जो असल में दूसरे नंबर की नेता की भूमिका निभाने की आदी थीं, लोगों को शांत कराने की कोशिश में नाकाम रहीं। बालकनी में उनके साथ खड़े करीबी सहयोगी भी हैरान लग रहे थे, क्योंकि एक खूंखार नेता अचानक लोगों के मन में डर पैदा करने में नाकाम हो गया था। भाषण को कवर कर रहे सरकारी टीवी चैनल के कैमरों ने तुरंत अपना लेंस हूटिंग करती भीड़ से हटाकर आसमान की ओर घुमा दिया। चाउसेस्कु का देश और उसके संस्थानों पर लगभग पूरा कंट्रोल था। देश की ज्यादातर आबादी ने उनके अलावा किसी और नेता को नहीं देखा था। शहर के चौराहों पर उनके बड़े-बड़े बैनर और कटआउट लगे होते थे, यहां तक कि स्कूलों और फैक्टरियों में भी उनकी तस्वीरें होती थीं। वे अक्सर टेलीविजन पर संदेश देते थे, जिसमें वे सीधे कैमरे की ओर देखते थे और आमतौर पर पहले से चुने हुए सवालों के ही जवाब देते थे।

उन्होंने पत्रकारों के साथ कभी भी सीधे या बिना स्क्रिप्ट वाली बातचीत नहीं की। सभी मुख्यधारा के मीडिया को बहुत सावधानी से कंट्रोल किया जाता था; सरकार से लोगों को जो भी जानकारी मिलती थी, उसे कॉमरेड चाउसेस्कु की तरफ से बताया जाता था - जैसे फैक्टरियाँ उन्हीं की वजह से चल रही थीं, खेती में कामयाबी उनके मार्गदर्शन से मिली थी, और तकनीकी उपलब्धियाँ उनकी बुद्धिमानी का नतीजा थीं। उस इलाके में हालात बहुत खराब थे, लेकिन पोलैंड या चेकोस्लोवाकिया के उलट, रोमानिया में कोई सक्रिय विपक्ष नहीं था। यूगोस्लाविया की तरह वहाँ संगठित और नाराज क्षेत्रीय अल्पसंख्यकों की कोई समस्या नहीं थी। सरकार के खिलाफ आवाज उठाने वालों पर तुरंत मुकदमा चलाकर उन्हें देश का दुश्मन बताकर दबा दिया जाता था। सेना, नौकरशाही और न्यायपालिका जैसे अहम संस्थानों में किसी भी व्यक्ति को तभी जगह मिलती थी जब वह चाउसेस्कु और पार्टी के प्रति वफादार साबित होता था। पिछले कुछ हफ्तों में, भारत की राजधानी की सड़कों पर प्रदर्शनकारियों ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को कायर बताते हुए नारे लगाए और कहा कि वे प्रेस से छिपते हैं; लोग खुलेआम उनके इस्तीफे की माँग कर रहे थे। लेकिन सरकार के प्रति नरम रुख रखने वाले टेलीविजन के बावजूद, कैमरे को भीड़ से आसमान की ओर मोड़ना अब संभव नहीं था। न केवल उस महान नेता और उनके तंत्र का डर खत्म हो गया था, बल्कि उदारवादी शिष्टाचार के अनकहे नियम भी ताक पर रख दिए गए थे। सत्ताधारी पार्टी की ओर से विपक्ष पर आमतौर पर किए जाने वाले तीखे जुबानी हमले अब प्रदर्शनकारी कर रहे थे। वे उन सभी चीजों को निशाना बना रहे थे जो नेता और सत्ता प्रतिष्ठान की छवि के लिए पवित्र थीं–वे चीजें जिन्हें बरसों की ब्रांडिंग के जरिए खड़ा किया गया था। उनके 56-इंच के सीने को लेकर प्रदर्शनकारियों ने कहा कि उन्हें अपनी ब्रा कस लेनी चाहिए, उनके एकदम सही दिखने वाले फोटोशूट को लेकर कहा गया कि उन्हें लिपस्टिक ठीक कर लेनी चाहिए और उनके चायवाला होने का दावा–जो कभी भारत की जमीनी हकीकत से उनके जुड़ाव की पहचान हुआ करता था–अब हाथों-हाथ बनाए गए पोस्टर्स की बाढ़ का जरिया बन गया था। ऐसे देश में जहाँ सोशल मीडिया पर गलत मैसेज को लाइक करना भी गिरफ्तारी की वजह बन सकता था, वहाँ ऐसा लगा जैसे सारे नियम-कायदे धरे के धरे रह गए हों और इंटरनेट बेसब्री से अगले मजेदार मीम का इंतजार कर रहा हो। खाकी वर्दी का डर छात्रों पर बेअसर हो चुका था, वे दिल्ली पुलिस की लाठियों के सामने डटे रहे और संस्कारी भीड़ की हिंसा की धमकियों से भी बेपरवाह रहे। यह सचमुच लड़ो या भागो वाला पल था। 25 जुलाई को नई दिल्ली में शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे के बाद कॉकरोच जनता पार्टी के समर्थक जश्न मनाते हुए। हालात तियानमेन स्क्वायर जैसे भी हो सकते थे। लाठियाँ बख्तरबंद गाड़ियों में बदल सकती थीं। लेकिन एक समस्या थी। मीडिया पर जितना ज़्यादा आक्रामक नियंत्रण होता है, असहमति की जरा सी भी आवाज नैरेटिव पर नियंत्रण को पूरी तरह खत्म कर सकती है। भीड़ को तो हटाया जा सकता है, लेकिन मीम्स बाहर आ चुके थे। सूचना का माहौल बदल चुका था। प्रधानमंत्री का अपमान करना अचानक कूल हो गया था और, जैसा कि भारतीय जनता पार्टी अच्छी तरह जानती थी जब उसने राहुल गांधी को पप्पू का अपमानजनक नाम दिया था, किसी मजाक का विषय बन जाने के बाद उससे उबरने में सालों लग जाते हैं।

कुछ ही दिनों में, मोदी ने छात्र प्रदर्शनकारियों की बात मान ली, उनकी सभी मांगें स्वीकार कर लीं और उस मीडिया प्लेटफॉर्म पर अपनी सहमति जाहिर की जिसका इस्तेमाल उन्होंने उन पर सबसे आक्रामक तरीके से हमला करने के लिए किया था - जो सरकारें इस भरोसे पर टिकी होती हैं कि उन्होंने लोगों को हमेशा के लिए यह यकीन दिला दिया है कि विरोध करना बेकार है, वे अचानक आए झटकों को ठीक से नहीं संभाल पातीं। ज़्यादातर मामलों में, जानकारी का माहौल यह तय करने में अहम भूमिका निभाता है कि क्या उबाल आने पर कोई बड़ा धमाका होगा। उदाहरण के लिए, 1789 की फ्रांसीसी क्रांति से पहले के समय में, लुई की सरकार की लड़खड़ाती आर्थिक स्थिति और कई अन्य समस्याओं के कारण लोगों में असंतोष पनप रहा था।लेकिन उस बड़े घटनाक्रम - पेरिस में आम लोगों द्वारा बास्तीलपर धावा बोलने - से ठीक पहले के दिनों में, असुरक्षा की भावना का सैलाब उमड़ पड़ा और विस्फोट हो गया। उस समय जानकारी के स्रोतों में अखबार और शाही फरमान शामिल थे, लेकिन भीड़ पर इनका बहुत कम असर हुआ। इसके बजाय, कैफ़े में होने वाली बातचीत, यात्रियों की कहानियाँ और बिना पुष्टि वाले पर्चे ज्यादा तेजी से फैल रहे थे। 1848 की फ्रांसीसी क्रांति के दौरान बास्तील महल में राजा लुई फिलिप का सिंहासन जलाया जा रहा था। मोदी और बीजेपी ने अरब स्प्रिंग के दौरान मीडिया के असर से बहुत कुछ सीखा। सोशल मीडिया को नकारने के बजाय, उन्होंने इसे सक्रिय रूप से अपनाया और इस पर कब्जा किया - न सिर्फ संस्थागत तौर पर, यानी प्लेटफॉर्म कंपनियों को अपनी बात मानने के लिए मजबूर करके, बल्कि स्वाभाविक रूप से भी, यानी इन्फ्लुएंसर्स के ज़रिए नेटवर्क पर कब्ज़ा करके और प्लेटफॉर्म को अपने समर्थकों से भरकर। उन्होंने एक बड़ी गलती की 2020 में उन्होंने टिकटॉक पर बैन लगा दिया। टिकटॉक पर बैन लगाने के कारण मायने नहीं रखते थे, उसके नतीजे मायने रखते थे। टिकटॉक की खासियत यह थी कि इसके एल्गोरिदम ने सोशल मीडिया के काम करने के तरीके को पूरी तरह से बदल दिया। किसी चीज के वायरल होने के लिए यह जरूरी नहीं था कि उसे किसने कहा है; टिकटॉक का एल्गोरिदम चीजों को दर्शकों तक इसलिए पहुंचाता था क्योंकि वे दिलचस्प होती थीं। टिकटॉक असल में यह समझ गया था कि लोग किसी कंटेंट पर कितनी देर तक टिके रहते हैं, और दर्शक कितनी जल्दी किसी चीज़ को पसंद या नापसंद करते हैं - चाहे उसे किसी ने भी भेजा हो या आगे बढ़ाया हो। लगभग तुरंत ही उन्होंने दूसरे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के मार्केट में सेंध लगाना शुरू कर दिया। अगर भारत में टिकटॉक बना रहता, तो मोदी सरकार पिछले कुछ सालों में यह समझने में कहीं बेहतर काम कर सकती थी कि लोग असल में क्या देखना या सुनना चाहते हैं - न कि सिर्फ वह जो उन्हें परोसा जाता है।

विज्ञापन अमेरिकी प्लेटफॉर्म को जल्द ही एहसास हो गया कि अगर वे वही करते रहे जो वे पहले कर रहे थे, तो वे टिकटॉक को नहीं हरा पाएँगे, इसलिए उन्होंने अपने एल्गोरिदम को टिकटॉक जैसा बनाने के लिए बदल दिया। जब हम सोचते हैं कि अभिजीत दिपके इतनी तेजी से कॉकरोच जनता पार्टी कैसे शुरू कर पाए और छात्र अपने लिए साफ़ खतरे के बावजूद विरोध-प्रदर्शन में क्यों शामिल होते रहे, तो इसका श्रेय टिकटॉक को जाता है। इसने इस बात को पूरी तरह से बदल दिया कि सोशल मीडिया यह कैसे तय करता है कि क्या चीज़ बिकने लायक है। दिपके की बात इसलिए बिकी क्योंकि उन्होंने जो मुद्दे उठाए, वे लोगों को स्वाभाविक रूप से पसंद आए। यह उस पार्टी के लिए एक चेतावनी होनी चाहिए थी जो सोचती है कि राष्ट्र-विरोधी होने के शोर-शराबे से किसी भी आवाज़ को दबाया जा सकता है। अमेरिका को डर था कि टिकटॉक और उसके चीनी मालिकाना हक से अमेरिकी नागरिकों के डेटा को समझने के तरीके पर असर पड़ सकता है। यह एक ऐसा प्लेटफॉर्म भी बन गया जहाँ इजराइल की आलोचना को ऑनलाइन वैसा जोर मिलने लगा, जैसा अमेरिका के मालिकाना हक वाले दूसरे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर नहीं मिलता था। यह बात तेजी से साफ हो गई कि टिकटॉक एक ऐसी जगह होगी जहाँ लोग वह बात कह सकेंगे जिसे मुख्यधारा के मीडिया में कहना आसान नहीं था। और इस तरह, यह एक ऐसी जगह बन जाएगी जहाँ राजनीतिक नैरेटिव (विमर्श) बनेंगे और मजबूत होंगे। इसलिए, टिकटॉक पर प्रतिबंध लगाने के बजाय, अमेरिका ने इसे किसी अमेरिकी कंपनी को बेचने के लिए मजबूर करने का फैसला किया। मोदी और बीजेपी ने ट्विटर और फेसबुक को तो घेर लिया, लेकिन सोशल मीडिया पर भारी संख्या में पोस्ट करने की जो रणनीति ट्विटर पर बहुत कारगर साबित होती है, वह टिकटॉक और नए इंस्टाग्राम पर लगभग पूरी तरह नाकाम रहती है।

अगर अभिनेता सलमान खान आपके संदेश को आगे बढ़ाते हैं, तो भी इससे कोई फायदा नहीं होता। इसके उलट, सोशल मीडिया पर इससे बस यही साबित होता है कि खान एक डींगें मारने वाले मसखरे हैं, एक ऐसे नंगे राजा हैं जिनकी असलियत बांद्रा में उनके किसी अनजान कोने से ज़्यादा कुछ नहीं है। फिलहाल तो भारतीय छात्र जीत गए हैं। हालांकि, इस जीत का चुनावी फायदा शायद इतनी जल्दी न मिले, क्योंकि संस्थाओं पर कब्जा मायने रखता है। लेकिन हाल के दिनों में काफ़ी बड़े और विविध चुनावी सिस्टम बुरी तरह नाकाम रहे हैं। अगर आपको लगता है कि नेपाल और बांग्लादेश की घटनाएं काफी चेतावनी नहीं हैं, तो आप इस बात पर भी गौर कर सकते हैं कि एक फिल्म स्टार, जिसने बस कुछ ही सार्वजनिक रैलियों में हिस्सा लिया था, आज तमिलनाडु का मुख्यमंत्री है; उसने उन दो बड़ी और पुरानी पार्टियों को आसानी से हरा दिया, जिनके पास जमीन पर लाखों कार्यकर्ता थे। छात्रों के लिए सबसे बुरा हाल चीन के हंड्रेड फ़्लावर्स कैंपेन जैसा हो सकता है। उस कैंपेन में असहमति के लिए जगह बनाने का दिखावा तो किया गया, लेकिन असल में वह सरकार के खिलाफ राय रखने वालों की पहचान करने का जरिया बन गया और उनमें से ज्यादातर को जल्द ही दबा दिया गया। लेकिन हम जानते हैं कि मोदी एर्दोगन नहीं हैं। उन्होंने छात्रों और उनके नैरेटिव का खुलकर सामना करने की हिम्मत नहीं दिखाई है। हम जानते हैं कि भारत ईरान या चीन नहीं है, और दिल्ली श्रीनगर या इंफाल नहीं है। भारतीय सरकार के साथ समस्या यह है कि उसने किसी भी वर्ग को निशाना बनाने से पहले हमेशा उसे दूसरा (अलग-थलग) और हाशिए पर धकेला है। छात्र प्रदर्शनकारी कश्मीरी, पूर्वोत्तर के निवासी, आदिवासी या मुस्लिम नहीं थे।

उनसे निपटने के लिए अलग तरह की हिम्मत चाहिए, और मोदी को या तो पुतिन या शी जिनपिंग, या कम से कम 2013 की शेख हसीना जैसा बनने की तैयारी करनी होगी। और चीन और ईरान ने भी छात्रों पर कार्रवाई करने में सावधानी बरती थी। सबसे अच्छे हालात की बात करें, तो वह तो पहले ही हासिल हो चुका है। हो सकता है कि मोदी के लिए अब बहुत देर हो चुकी हो, लेकिन वे अब भी कोई कड़ा फैसला ले सकते हैं और अपने खिलाफ बोलने वालों को लंबे समय तक कानूनी मुश्किलों में फंसा सकते हैं। अगर ऐसा नहीं करते, तो हिमालय की वह काल्पनिक यात्रा, जिसकी तस्वीरें मोदी अक्सर पोस्ट करते रहते हैं, शायद हमारी सोच से कहीं ज्यादा करीब हो। तानाशाही दो मुख्य बातों पर टिकी होती है। मुख्य नेता के करीबी लोगों का वफ़ादारी का दिखावा और बाकी सभी लोगों का हर रोज उनकी बात मानना। सम्राट के नए कपड़े वाली कहानी इसलिए आज भी प्रासंगिक है क्योंकि यह चापलूसी की असलियत को बखूबी बयां करती है। चाउसेस्कु की सबसे यादगार तस्वीर वह थी जिसमें उनके चेहरे पर हैरानी और घबराहट साफ़ दिख रही थी, जब उन्होंने लोगों को अपने ख़िलाफ़ नारे लगाते और हूटिंग करते देखा। भारतीय प्रधानमंत्री ने भीड़ के सामने आकर भाषण न देकर अच्छा ही किया। उन्होंने जो अनाड़ीपन भरा इंस्टाग्राम वीडियो बनाया, उस पर ऑनलाइन काफी मजाक उड़ाया गया, लेकिन कम से कम उन्हें उस शर्मिंदगी का सामना तो नहीं करना पड़ा कि भीड़ में से कोई चिल्लाकर कहे कि वे अपनी ब्रा ठीक कर लें। मुझे नहीं लगता कि मैं एक महीने पहले ऐसा कह पाता।

भारत में ये हैं सबसे आसान और खूबसूरत ट्रेक

अगर आप पहाड़ों से प्यार करते हैं और पहली बार ट्रेकिंग का प्लान बना रहे हैं, तो भारत में कई ऐसे ट्रेक मौजूद हैं जो पहली बार वाले यात्रियों के लिए बिल्कुल परफेक्ट माने जाते हैं। इन ट्रेक्स पर जाने के लिए आपको ज्यादा पैसे खर्च करने की जरूरत नहीं होती। कम बजट में भी आप शानदार पहाड़, झरने, जंगल और खूबसूरत सूर्योदय का मजा ले सकते हैं। आजकल युवाओं के बीच वीकेंड ट्रैकिंग ट्रिप्स तेजी से लोकप्रिय हो रही हैं। लोग शहर की भागदौड़ और तनाव से दूर कुछ समय प्रकृति के बीच बिताना चाहते हैं। ऐसे में छोटे और आसान ट्रेक सबसे बेहतरीन विकल्प बनकर सामने आते हैं। इन ट्रेक्स पर ज्यादा अनुभव की जरूरत नहीं होती और फिटनेस का बेसिक स्तर होने पर भी आसानी से पूरा किया जा सकता है। भारत के हिमाचल, उत्तराखंड और महाराष्ट्र जैसे राज्यों में कई ऐसे ट्रेक्स हैं जो कम समय और कम खर्च में शानदार रोमांचक अनुभव देते हैं। अगर आप दोस्तों के साथ या सोलो ट्रिप का प्लान बना रहे हैं, तो ये बिगिनर फ्रेंडली ट्रेक आपके लिए यादगार साबित हो सकते हैं।

तुंगनाथ ट्रेक

उत्तराखंड के रूद्रप्रयाग में विश्व का सबसे ऊंचा शिवमंदिर तुंगनाथ है, जहां तक आप तुंगनाथ ट्रेक के जरिए पहुंच सकते हैं। चोपता से लगभग 4 किमी का मध्यम स्तर ट्रेक आसान और बजट फ्रेंडली है। अप्रैल से जून और सितंबर नवंबर के बीच का समय ट्रेक के लिए सबसे अच्छा माना जाता है। इस ट्रेकिंग का अनुभव भी बजट में मिलेगा। यहां की सैर का कुल खर्च महज 5 हजार रुपये के अंदर आता है।

त्रिउंड ट्रेक

हिमाचल का मशहूर त्रिउंड नए यात्रियों या पहली बार ट्रेकिंग करने वालों के बीच सबसे ज्यादा लोकप्रिय ट्रेक माना जाता है। यह ट्रेक मैक्लोडगंज से शुरू होता है और लगभग 9 किलोमीटर लंबा है। रास्ते में हरे-भरे पहाड़ और धौलाधार रेंज का शानदार नजारा देखने को मिलता है। यहां कैंपिंग का अनुभव भी बेहद खास होता है। इस ट्रेक का कुल खर्च लगभग 2500 रुपये से 4000 रुपये प्रति व्यक्ति तक आ सकता है।

देवकुंड ट्रेक

झरनों और जंगलों के बीच शानदार अनुभव के लिए महाराष्ट्र के देवकुंड ट्रेक की सैर पर जाएं। देवकुंड जलप्रपात महाराष्ट्र के सबसे खूबसूरत ट्रेकिंग स्पॉट्स में से एक है। यह ट्रेक खासकर मानसून के मौसम में बेहद आकर्षक लगता है। रास्ते में नदी, जंगल और छोटे झरने देखने को मिलते हैं। मुंबई और पुणे के यात्रियों के लिए यह कम बजट का वीकेंड डेस्टिनेशन माना जाता है।

नाग टिब्बा ट्रेक

वीकेंड पर रोमांचक सफर के लिए नाग टिब्बा ट्रेक परफेक्ट है। नाग टिब्बा उत्तराखंड का एक आसान और शानदार वीकेंड ट्रेक है। दिल्ली और देहरादून से यहां तक आसानी से पहुंचा जा सकता है। देहरादून से पंतवारी गांव तक ड्राइव करके पहुंच सकते हैं। फिर आगे लगभग 16-18 किमी का आसान से मध्यम ट्रेक है। अद्भुत दृश्यों और घने जंगलों के बीच 2 दिन में आसानी से इस ट्रेक को पूरा किया जा सकता है। इसे नए ट्रैवलर्स के लिए काफी सुरक्षित माना जाता है। यहां से हिमालय की बर्फीली चोटियों का नजारा बेहद खूबसूरत दिखाई देता है।

हंसना मना है

एक बार संता जंगल से होकर गुजर रहा था सामने पेड़ पर लटकते सांप को देखकर रुक गया और बोला: सिर्फ लटकने से कुछ नहीं होगा, मम्मी को बोलो कॉम्प्लान पिलाये।

एक गरीब आदमी बोला: ऐसी जिंदगी से तो मौत अच्छी! अचानक यमदूत आया और बोला: तुम्हारी जान लेने आया हूं। आदमी बोला: लो अब गरीब आदमी मजाक भी नही कर सकता?

पापा: कितनी फ्रीक्वेंसी का भूकंप आया था। बेटा: 7.9 का। पापा: अरे वाह बेटा, आजकल तो भूकंप भी तेरे नंबर से ज्यादा आने लगे।

डॉक्टर: आपकी परेशानी व बीमारी का कारण मुझे समझ में नहीं आ रहा है। असल में मैं समझाता हूं कि यह नशे की वजह से हैं। मरीज -कोई बात नहीं, जब आपका नशा उतरेगा, तब आ जाऊंगा।

पुत्र: मां मैं भी तालाब में तैरना चाहता हुं? मां: नहीं ! बेटा डूब जाओगे। पुत्र: लेकिन पिताजी तो घंटे- भर से तालाब में तैर रहें है। मां- बेटा तुम्हारे पापा का बीमा हो चुका है।

मेहमान: और बताओ बेटा आगे का क्या प्लान है... बच्चा- बस आपके जाते ही बिस्कुट खाऊंगा... वैसे भी नमकीन और मेवा तो आपने छोड़ी नहीं है....

कहानी | प्रभु भोग का फल

एक सेठजी बड़े कंजूस थे। एक दिन दुकान पर बेटे को बैठा दिया और बोले कि बिना पैसा लिए किसी को कुछ मत देना, मैं अभी आया। अकस्मात एक संत आये जो अलग-अलग जगह से एक समय की भोजन सामग्री लेते थे। लड़के से कहा- बेटा जरा नमक दे दो। लड़के ने सन्त को डिब्बा खोल कर एक चम्मच नमक दिया। सेठजी आये तो देखा कि एक डिब्बा खुला पड़ा था। सेठजी ने कहा- क्या बेचा बेटा? बेटा बोला- एक सन्त, जो तालाब के किनारे रहते हैं, उनको एक चम्मच नमक दिया था। सेठ का माथा ठनका और बोला- अरे मूर्ख! इसमें तो जहरीला पदार्थ है। अब सेठजी भाग कर संतजी के पास गए, सन्तजी भगवान को भोग लगाकर थाली लेकर भोजन करने बैठे ही थे कि.. सेठजी दूर से ही बोले- महाराज जी रुकिए, आप जो नमक लाये थे, वो जहरीला पदार्थ था, आप भोजन नहीं करें। संतजी बोले- भाई हम तो प्रसाद लेंगे ही, क्योंकि भोग लगा दिया है और भोग लगा भोजन छोड़ नहीं सकते। हां, अगर भोग नहीं लगता तो भोजन नहीं करते और कहते-कहते भोजन शुरू कर दिया। सेठजी के होश उड़ गए, वो तो बैठ गए वहीं पर। रात हो गई, सेठजी वहीं सो गए कि कहीं संतजी की तबियत बिगड़ गई तो कम से कम बैद्यजी को दिखा देंगे तो बदनामी से बचेंगे। सोचते सोचते उन्हें नींद आ गई। सुबह जल्दी ही सन्त उठ गए और नदी में स्नान करके स्वस्थ दशा में आ गये। सेठजी ने कहा- महाराज तबियत तो ठीक है। सन्त बोले- भगवान की कृपा है! इतना कह कर मन्दिर खोला तो देखते हैं कि भगवान के श्री विग्रह के दो भाग हो गए हैं और शरीर काला पड़ गया है। अब तो सेठजी सारा मामला समझ गए कि अटल विश्वास से भगवान ने भोजन का जहर भोग के रूप में स्वयं ग्रहण कर लिया और भक्त को प्रसाद ग्रहण कराया। सेठजी ने घर आकर बेटे को घर दुकान सम्भलने को कहा और स्वयं भक्ति करने सन्त शरण में चले गए! इसलिए रोज ही भगवान को निवेदन करके भोजन का भोग लगा करके ही भोजन करें, भोजन अमृत बन जाता है। अत: आज से ही यह नियम बना लें कि भोजन बिना भोग लगाए नहीं करेंगे।

7 अंतर खोजें

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष स्थायी संपत्ति के कार्य बड़ा लाभ दे सकते हैं। बेरोजगारी दूर करने के प्रयास सफल रहेंगे। आय में वृद्धि तथा उन्नति मनोनुकूल रहेंगे। लाभ के अवसर हाथ आएंगे।

वृषभ पार्टी व पिकनिक का कार्यक्रम बनेगा। स्वादिष्ट व्यंजनों का लाभ मिलेगा। काम में मन लगेगा। व्यापार-व्यवसाय मनोनुकूल रहेंगे। रचनात्मक कार्य सफल रहेंगे।

मिथुन दु:खद सूचना मिल सकती है, धैर्य रखें। फालतू खर्च होगा। कुसंगति से बचें। बेकार की बातों पर ध्यान न दें। अपने काम पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है।

कर्क भूले-बिसरे साथी तथा आगंतुकों के स्वागत तथा सम्मान पर व्यय होगा। आत्मसम्मान बना रहेगा। बड़ा काम करने का मन बनेगा। उत्साहवर्धक सूचना प्राप्त होगी।

सिंह घर-बाहर प्रसन्नतादायक वातावरण रहेगा। नौकरी में चैन महसूस होगा। व्यापार से संतुष्टि रहेगी। संतान की चिंता रहेगी। प्रतिद्वंद्वी तथा शत्रु हानि पहुंचा सकते हैं।

कन्या यात्रा मनोनुकूल मनोरंजक तथा लाभप्रद रहेगी। भेंट व उपहार की प्राप्ति संभव है। व्यापार-व्यवसाय से मनोनुकूल लाभ होगा। घर-बाहर सफलता प्राप्त होगी।

तुला स्वास्थ्य का पाया कमजोर रहेगा। बनते कामों में विघ्न आएंगे। चिंता तथा तनाव रहेंगे। जीवनसाथी से सामंजस्य बैठाएं। फालतू खर्च होगा। कुसंगति से बचें।

वृश्चिक बकाया वसूली के प्रयास सफल रहेंगे। यात्रा मनोरंजक रहेगी। लाभ के अवसर हाथ आएंगे। नौकरी में सुकून रहेगा। जल्दबाजी में कोई आवश्यक वस्तु गुम हो सकती है।

धनु नई योजना लागू करने का श्रेष्ठ समय है। कार्यप्रणाली में सुधार होगा। सामाजिक कार्य सफल रहेंगे। मान-सम्मान मिलेगा। लाभ के अवसर हाथ आएंगे।

मकर किसी जानकार प्रबुद्ध व्यक्ति का सहयोग प्राप्त होने के योग हैं। तंत्र-मंत्र में रुचि रहेगी। किसी राजनयिक का सहयोग मिल सकता है। लाभ के दरवाजे खुलेंगे।

कुम्भ स्वास्थ्य का ध्यान रखें। चोट व दुर्घटना से बचें। आय में कमी रह सकती है। घर-बाहर असहयोग व अशांति का वातावरण रहेगा। अपनी बात लोगों को समझा नहीं पाएंगे।

मीन प्रेम-प्रसंग में अनुकूलता रहेगी। किसी वरिष्ठ व्यक्ति के सहयोग से कार्य की बाधा दूर होकर लाभ की स्थिति बनेगी। परिवार के लोग अनुकूल व्यवहार करेंगे।

बॉलीवुड | मन की बात

दो बार मुझे एक्टिंग स्कूल से रिजेक्ट कर दिया गया था : विजय

हिंदी सिनेमा के उभरते हुए अभिनेता के तौर पर विजय वर्मा को जाना जाता है। एक आउटसाइडर के तौर पर इंडस्ट्री में विजय ने अपने दम पर खास पहचान बनाई है। इस बीच विजय वर्मा ने अपने संघर्ष के दिनों को याद किया है और बताया है कि कैसे उन्हें एक्टिंग स्कूल से दो बार रिजेक्शन झेलना पड़ा था। आज भी बच्चों को अभिनय के पेशे में आने के लिए अपने माता-पिता को मनाना आसान नहीं होता है। गली ब्वाय और डार्लिंग्स फिल्मों के अभिनेता विजय वर्मा के लिए भी अभिनेता बनने की राह आसान नहीं थी। विजय बताते हैं-`तब इतना आत्मविश्वास नहीं था। इसलिए एक्टिंग में आने से पहले सोचा कि उसके आस-पास रहने वाला कोई कोर्स कर लेता हूं। मैंने नेशनल इंस्टीट्यूट फैशन टेक्नोलाजी में आवेदन किया। उस पर साइन कराने के लिए पापा के पास गया, तो उन्होंने यह कहकर फार्म फाड़ दिया कि दर्जी बनना है। फिर मैंने हैदराबाद में एक साल का इवेंट मैनेजमेंट का कोर्स किया, वहां मेरे क्लासमेट राणा डग्गुबाती थे। एक साल कोर्स किया और फिर दो इवेंट में मजदूरों के जैसा काम किया। उस समय खराब लगा। उसके बाद मैं हैदराबाद के एक एक्टिंग स्कूल में गया और कहा कि मुझे एक्टिंग सीखनी है। उन्होंने यह कहकर भगा दिया कि इसमें आने के लिए प्रतिबद्धता और समर्पण चाहिए। फिर मैंने एफटीआइआइ में आवेदन किया, वहां भी अंतिम राउंड में रिजेक्ट हो गया। मैं दोबारा उसी एक्टिंग स्कूल में गया, इस बार पता नहीं उन्होंने मेरे अंदर क्या देखा और उन्होंने मुझे चुन लिया। बात की जाए विजय वर्मा की अगली फिल्म के बारे में तो उसका नाम एंथनी है। इस मूवी में विजय नेगेटिव रोल प्ले करते हुए नजर आ सकते हैं। फिल्म के लीड रोल सनी देओल हैं और पहली बार विजय उनके साथ काम करते हुए दिखाई देंगे। बात करें एंथनी की रिलीज डेट की तो उम्मीद है कि 2027 में ये बड़े पर्दे पर रिलीज जा सकती है।

सलमान की फीस घटाने की खबरें झूठी कल से शुरू होगी SVC63 की शूटिंग

बॉलीवुड | मसाला

सलमान खान अपनी अपकमिंग फिल्म SVC63 को लेकर चर्चा में हैं। हाल ही में खबर आई कि सलमान खान ने इस फिल्म की फीस घटाकर 70 करोड़ रुपये की है। हालांकि कुछ ही दिनों बाद मेकर्स ने फिल्म के लिए सलमान की फीस से जुड़ी अटकलों को आधिकारिक तौर पर खारिज कर दिया है। बॉलीवुड एक्टर 6 अगस्त से इस फिल्म का अगला शेड्यूल शुरू करने की तैयारी कर रहे हैं।

SVC63 बनाने वाले प्रोडक्शन हाउस, श्री वेंकटेश्वर क्रिएशन्स ने सलमान खान की एक्टिंग फीस से जुड़ी खबरों को आधिकारिक तौर पर गलत बताया है। निर्माताओं ने इन अटकलों को पूरी तरह से मनगढ़ंत और तथ्यों के हिसाब से गलत बताया है। उन्होंने कहा कि टीम का फोकस एक शानदार सिनेमाई अनुभव देने पर है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक SVC63 के मेकर्स ने मुंबई में छह हफ्ते का शेड्यूल प्लान किया है। इस शेड्यूल में जबरदस्त एक्शन सीन और सैकड़ों जूनियर आर्टिस्ट के साथ भीड़ वाले कई सीक्वेंस शामिल होंगे। शुरू में इस शेड्यूल की शूटिंग हैदराबाद में करने का प्लान बनाया था। मगर बाद में इसे मुंबई शिफ्ट कर दिया गया।

इसके अलावा, SVC63 के लिए मेकर्स का बड़ा शेड्यूल सितंबर तक चलेगा। उनका लक्ष्य अक्टूबर तक सलमान खान स्टारर इस फिल्म के एक्शन हिस्सों को पूरा करना है। इस प्रोजेक्ट को ईद 2027 पर सिनेमाघरों में रिलीज करने का प्लान है। इसके निर्देशक वाम्शी पैडिपल्ली हैं। यह नयनतारा के साथ सलमान का पहला प्रोफेशनल कोलैबोरेशन है।

फिल्म 'अधूरे हम अधूरे तुम' में लीड हीरो बनकर लौटेंगे इमरान खान

बॉलीवुड | गपशप

इमरान खान ने काफी वक्त से स्क्रीन से दूरी बना कर रखी थी। मगर अब वह बतौर लीड एक्टर दमदार वापसी के लिए पूरी तरह तैयार हैं। एक बातचीत के दैरान उन्होंने अपनी आगामी फिल्म अधूरे हम अधूरे तुम से जुड़ी जानकारी साझा की।

हाल ही में दिए एक इंटरव्यू में इमरान खान ने अपनी अगली फिल्म के बारे में काफी कुछ बताया। हॉलीवुड रिपोर्टर से बातचीत में इमरान ने कहा, 'मेरी फिल्म अधूरे हम अधूरे तुम की शूटिंग पूरी हो चुकी है। यह फिलहाल पोस्ट-प्रोडक्शन में है और इस साल के अंत तक इसके रिलीज होने की उम्मीद है। यह एक एडल्ट रोमांटिक कॉमेडी फिल्म है, जो मेरे जीवन के मौजूदा हालात दर्शाती है।'

इमरान खान आखिरी बार साल 2015 में रिलीज हुई फिल्म कट्टी बट्टी में बतौर लीड हीरो नजर आए थे। अब वे सीधे फिल्म अधूरे हम अधूरे तुम में लीड रोल प्ले करेंगे। फिल्म के बारे में आगे एक्टर ने कहा, 'मैंने अभी-अभी एक बेहद प्रतिभाशाली युवा अभिनेत्री, गुरफतेह पीरजादा के साथ काम किया है। दरअसल, यह वो फिल्म है जिसे मुझे 10 साल बाद बनाना ही था।' बता दें कि इस फिल्म का निर्देशन निखिल आडवाणी ने किया है। इमरान खान ने 2008 में रिलीज हुई 'जाने तू या जानें ना' से अपना बॉलीवुड डेब्यू किया था। इसमें उनके साथ जेनेलिया डिसूजा भी नजर आई थीं। फिल्म बॉक्स आफिस पर एक बड़ी हिट साबित हुई थी। इसके बाद इमरान ने लक, आई हेट लव स्टोरीज, देल्ही बेली और मेरे ब्रदर की दुल्हन जैसी कई हिट फिल्में दी थीं। इस साल जनवरी में इमरान ने अपने मामा आमिर खान के बैनर तले बनी फिल्म हैप्पी पटेल खतरनाक जासूस में कैमियो किया था।

अजब-गजब | ये है दुनिया का सबसे भूलभुलैया

इस रेगिस्तान में पांच-पांच मिनट में बदल जाता है रास्ता, हर कदम पर छुपी है मौत!

दुनिया में कई ऐसी जगहें हैं जो अपनी खूबसूरती के लिए मशहूर हैं, जबकि कुछ स्थान अपनी कठिन परिस्थितियों और रहस्यमयी प्रकृति के कारण लोगों को आकर्षित करते हैं। इन्हीं में से एक है सहारा रेगिस्तान, जिसे दुनिया का सबसे बड़ा गर्म रेगिस्तान माना जाता है। इसकी विशालता, बदलते रेत के टीले और बेहद कठिन जलवायु इसे पृथ्वी के सबसे चुनौतीपूर्ण इलाकों में शामिल करते हैं।

सोशल मीडिया पर इन दिनों सहारा रेगिस्तान से जुड़ी एक पोस्ट तेजी से वायरल हो रही है। इसमें इसे दुनिया की सबसे बड़ी प्राकृतिक भूलभुलैया बताया गया है। दावा किया जा रहा है कि यहां रास्ते कुछ ही मिनटों में बदल जाते हैं और अगर कोई व्यक्ति दिशा खो दे तो उसका वापस लौटना बेहद कठिन हो सकता है।

सहारा रेगिस्तान का क्षेत्रफल लगभग 92 लाख वर्ग किलोमीटर (करीब 9.2 मिलियन वर्ग किलोमीटर) है। यह इतना विशाल है कि इसका आकार लगभग पूरे संयुक्त राज्य अमेरिका (ङ) के बराबर माना जाता है। यह रेगिस्तान उत्तरी अफ्रीका के कई देशों में फैला हुआ है, जिनमें अल्जीरिया, लीबिया, मिस्र, चाड, नाइजर, माली, मॉरिटानिया, सूडान, ट्यूनीशिया और मोरक्को जैसे देश शामिल हैं।

सहारा में दूर-दूर तक केवल रेत, चट्टानें और क्षितिज दिखाई देता है। यहां अधिकांश स्थानों पर कोई स्थायी सड़क, इमारत या प्राकृतिक पहचान नहीं होती, जिससे दिशा का अनुमान लगाना बेहद मुश्किल हो जाता है। तेज हवाओं के कारण रेत के टीले लगातार अपना आकार और स्थान बदलते रहते हैं। हालांकि हर पांच मिनट में रास्ता बदल जाता है कहना एक अतिशयोक्तिपूर्ण अभिव्यक्ति है, लेकिन यह सच है कि समय के साथ हवाएं रेत के टीलों की बनावट बदल सकती हैं, जिससे पुराने निशान मिट जाते हैं और रास्ते पहचानना कठिन हो जाता है।

सहारा के कई दूरस्थ हिस्सों में सैकड़ों किलोमीटर तक कोई बस्ती या इंसानी गतिविधि दिखाई नहीं देती। चारों ओर केवल रेत, चट्टानें और खुला आसमान नजर आता है। ऐसे इलाकों में यदि कोई व्यक्ति बिना उचित तैयारी या मार्गदर्शक के पहुंच जाए और दिशा भटक जाए, तो बचाव कार्य भी बेहद चुनौतीपूर्ण हो सकता है।

सहारा रेगिस्तान का मौसम दुनिया के सबसे कठोर मौसमों में गिना जाता है। गर्मियों के दौरान कई स्थानों पर दिन का तापमान 45 से 50 डिग्री सेल्सियस या उससे अधिक तक पहुंच सकता है। वहीं रात के समय तापमान तेजी से गिर जाता है और कई इलाकों में काफी ठंड महसूस होती है। दिन और रात के तापमान में इतना बड़ा अंतर यहां जीवन को और कठिन बना देता है।

दुनिया के वो देश, जहां नहीं होते राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री राजा, सुल्तान, अमीर या पोप के हाथ में होती है सत्ता

दुनिया के ज्यादातर देशों में सरकार चलाने की जिम्मेदारी राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री जैसे बड़े पदों पर होती है। आमतौर पर राष्ट्रपति देश का सर्वोच्च संवैधानिक प्रमुख होता है, जबकि प्रधानमंत्री सरकार का मुखिया होता है और प्रशासन, नीतियों और रोजमर्रा के फैसलों की जिम्मेदारी संभालता है। लेकिन दुनिया में कुछ ऐसे देश भी हैं, जहां न राष्ट्रपति होता है और न ही प्रधानमंत्री। वहां शासन की कमान राजा, सुल्तान, अमीर या पोप जैसे शासकों के हाथ में होती है। इन देशों की शासन व्यवस्था बाकी दुनिया से बिल्कुल अलग है। **सऊदी अरब:** सऊदी अरब एक पूर्ण राजशाही वाला देश है। यहां देश का सबसे बड़ा पद राजा का होता है। राजा ही देश के प्रमुख होते हैं और सरकार का संचालन भी उन्हीं के नेतृत्व में होता है। देश के बड़े फैसलों से लेकर प्रशासन तक की जिम्मेदारी राजा के हाथ में रहती है। इसलिए यहां राष्ट्रपति का कोई पद नहीं है। फिलहाल सलमान बिन अब्दुल अजीज अल सउद वर्तमान में सउदी अरब के बादशाह और सउद राजघराने के प्रमुख है। **ओमान:** ओमान में शासन की पूरी कमान सुल्तान के पास होती है। सुल्तान ही देश के सर्वोच्च शासक हैं और कार्यपालिका, न्यायपालिका तथा कई अहम फैसलों पर उनका अधिकार होता है। इसी वजह से यहां राष्ट्रपति का पद नहीं है और देश की व्यवस्था सुल्तान के नेतृत्व में चलती है। वर्तमान में ओमान के सुल्तान हैथम बिन तारिक अल सईद। **ब्रूनेई:** दक्षिण-पूर्व एशिया का छोटा लेकिन बेहद समृद्ध देश ब्रुनेई भी पूर्ण राजशाही व्यवस्था अपनाता है। यहां सुल्तान ही देश के सर्वोच्च नेता होते हैं। शासन से जुड़े लगभग सभी महत्वपूर्ण फैसले सुल्तान के नेतृत्व में लिए जाते हैं। वर्तमान में ब्रुनेई के सुल्तान हसनल बोल्कियाह है। उनका पूरा नाम हाजी हसनल बोल्कियाह मुइज़्ज़दिन वाद्दौल्लाह है और वह देश के प्रधानमंत्री भी हैं। **कतर:** कतर की शासन व्यवस्था भी राजशाही पर आधारित है। यहां देश का नेतृत्व अमीर करते हैं। अमीर के पास देश की सबसे बड़ी शक्तियां होती हैं और वही सरकार के महत्वपूर्ण फैसले लेते हैं। इसी कारण यहां राष्ट्रपति का पद नहीं है और शासन अमीर के नेतृत्व में चलता है। कतर के वर्तमान अमीर हैं तमीम बिन हमद अल थानी । **इस्वातिनी:** अफ्रीका का देश इस्वातिनी, जिसे पहले स्वाजीलैंड कहा जाता था, आज भी पूर्ण राजशाही व्यवस्था वाला देश है। यहां राजाके पास सबसे ज्यादा अधिकार होते हैं। सरकार और प्रशासन से जुड़े कई बड़े फैसले राजा के नेतृत्व में लिए जाते हैं। एस्वातिनी के वर्तमान राजा का नाम मस्वाती तृतीय है। उनका पूरा नाम मखोसेटिवे दलामिनी है । **वैटिकन सिटी:** वैटिकन सिटी दुनिया का सबसे छोटा स्वतंत्र देश है। यहां शासन की पूरी जिम्मेदारी पोप के हाथ में होती है। पोप केवल कैथोलिक ईसाई धर्म के सर्वोच्च गुरु ही नहीं, बल्कि वैटिकन सिटी के सर्वोच्च शासक भी हैं।

गिरिराज सिंह के बयान पर कश्मीर में घमासान

भाजपा नेता ने महबूबा को बताया था आतंकी

» पीडीपी ने केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह पर किया पलटवार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी के नेता और केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह ने पीडीपी की राष्ट्रीय अध्यक्ष और जम्मू-कश्मीर की पूर्व मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती को आतंकी बताने पर सियासी घमासान मच गया है। विपक्ष समेत पीडीपी ने इस पर पलटवार किया है। पीडीपी ने केंद्रीय मंत्री को सीख देते हुए कहा है कि ऐसी भाषा का लोकतांत्रिक परिप्रेक्ष्य में कहीं कोई स्थान नहीं है।

पार्टी ने कहा कि राजनीतिक मतभेदों को व्यक्तिगत हमलों के बजाय बहस और बातचीत के ज़रिए सुलझाया जाना चाहिए और आरोप लगाया कि इन टिप्पणियों से सार्वजनिक चर्चा का स्तर गिरा है, पीडीपी ने राजनीतिक नेताओं से सार्वजनिक बयानों में संयम बरतने और लोकतांत्रिक संस्थाओं की गरिमा बनाए रखने का आग्रह किया। बता दें केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह ने अनुच्छेद 37० को हटाए जाने के सात साल पूरा होने की संध्या पर आयोजित एक विरोध प्रदर्शन करने पर पीडीपी प्रमुख महबूबा मुफ़्ती की आलोचना की। सिंह ने कहा- महबूबा मुफ्ती एक आतंकवादी हैं। मैंने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि वह लंबे समय तक आतंकवादियों का साथ देती रहीं। उन्होंने कुछ समय हमारे साथ बिताया और हमने उन्हें सही रास्ते पर लाने की कोशिश की, लेकिन जब वह नहीं बदलीं, तो हमने उन्हें जाने दिया।

लोकतांत्रिक देश में इनके लिए कोई जगह नहीं : पीडीपी

श्रीनगर में धरने पर उल्टा राष्ट्रध्वज थामे दिखीं पूर्व सीएम

पीडीपी ने एक बयान में कहा कि पार्टी केंद्रीय मंत्री और भाजपा नेता गिरिराज सिंह की उस टिप्पणी की कड़ी निंदा करती है जिसमें उन्होंने पीडीपी अध्यक्ष महबूबा मुफ्ती को आतंकवादी कहा है, ऐसे गैर-जिम्मेदाराना और भड़काऊ बयान एक केंद्रीय मंत्री को शोभा नहीं देते और लोकतांत्रिक देश में इनके लिए कोई जगह नहीं है। बता दें पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी (पीडीपी) प्रमुख और जम्मू-कश्मीर की पूर्व मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती मंगलवार रात यहां विरोध प्रदर्शन के दौरान उल्टा राष्ट्रीय ध्वज पकड़े हुए दिखाई दीं, जिसके बाद विवाद खड़ा हो गया। मुफ्ती ने अगस्त 2019 में अनुच्छेद 370 और अनुच्छेद 35ए को निष्प्रभावी करके जम्मू-कश्मीर का विशेष दर्जा समाप्त किए जाने के विरोध में श्रीनगर स्थित पीडीपी कार्यालय के बाहर पार्टी नेताओं और कार्यकर्ताओं के साथ धरना दिया। धरने के दौरान पूर्व मुख्यमंत्री राष्ट्रध्वज और पूर्ववर्ती जम्मू-कश्मीर राज्य का झंडा थामे हुए थीं। हालांकि, अधिकारियों के अनुसार राष्ट्रध्वज गलती से उल्टा पकड़ा गया था। अधिकारियों ने बताया कि अब पीडीपी प्रमुख के खिलाफ कानूनी कार्रवाई करने पर विचार किया जा रहा है। राष्ट्रध्वज को गलत तरीके से प्रदर्शित करना भारत की ध्वज संहिता का उल्लंघन माना जाता है। नियमों के अनुसार, राष्ट्रध्वज में सबसे ऊपर हमेशा केसरिया रंग, बीच में सफेद रंग और सबसे नीचे हरा रंग होना चाहिए। सफेद रंग पर 24 तीलियों वाला गहरे नीले रंग का अशोक चक्र होना अनिवार्य है।

जनता चाहेगी तो राजनीति में उतरूंगा : अभिजीत

» सीजेपी के संस्थापक ने कहा- भारत को इस समय जन-आंदोलन की जरूरत

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। कॉकरोच जनता पार्टी के संस्थापक अभिजीत दीपके जंनत मंतर पर प्रोटेस्ट के बाद अब अपनी आगे की प्लानिंग में लग गए हैं। अभिजीत के घर कॉकरोच जनता पार्टी के पदाधिकारियों की बैठक आज से शुरू होने जा रही है। इससे पहले अभिजीत ने रॉयटर्स को दिए इंटरव्यू में साफ कर दिया है कि अभी उनका राजनीति में उतरने का कोई प्लान नहीं है लेकिन उन्होंने इसकी संभावनाओं से भी इनकार नहीं किया है। अभिजीत ने कहा-हम युवाओं से राय लेना चाहते हैं कि वो किन मुद्दों पर हमारा ध्यान चाहते हैं।

उन्होंने यह भी बताया कि समर्थक बुधवार से दो दिनों के लिए मिलेंगे ताकि आगे के कदमों का फैसला किया जा सके। दीपके ने कहा- इस बैठक का मकसद कॉकरोच जनता पार्टी का मुख्य एजेंडा तय करना और यह चर्चा करना होगा कि हम इस सामाजिक आंदोलन को आगे कैसे ले जा सकते हैं। उन्होंने फिलहाल तुरंत चुनाव लड़ने से साफ इनकार कर दिया, लेकिन कहा कि अगर जनता का बहुमत चाहेगा, तो वे पार्टी बनाने पर विचार करेंगे और आगे चलकर लोगों की मांग पर चुनाव भी लड़ेंगे। दीपके ने कहा-भारत में मुझे नहीं लगता कि अभी कोई नई राजनीतिक पार्टी बनाना सही रास्ता है। भारत को इस समय एक ऐसे जन-आंदोलन की जरूरत है, जो देश के सभी संस्थानों पर लोगों का भरोसा और उनकी जवाबदेही वापस ला सके. फिलहाल कॉकरोच जनता पार्टी (सीजेपी) का पूरा ध्यान देश के युवाओं की आवाज उठाने पर रहेगा।

एफआईआर दर्ज कराएंगे कि देश के गृहमंत्री लापता हैं : राउत

» शिवसेना यूबीटी सांसद ने अमित शाह पर साधा निशाना

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुंबई। महाराष्ट्र में उद्धव ठाकरे गुट के राज्यसभा सांसद संजय राउत ने लोकसभा के मानसून सत्र के दौरान सदन में पेश न होने को लेकर हमला बोला। उन्होंने कहा कि देश के गृहमंत्री देश में यहां वहां दिखते हैं। कभी संसद के कैंपस में भी दिखते हैं, लेकिन सदन में नहीं आते, लोकसभा और राज्यसभा उन्हें ढूंढ रही है लेकिन वह मिल नहीं रहे। अब हम गुमशुदा की तलाश के पोस्टर्स बनाए हैं। संजय राउत ने तंजिया लहजे में कहा कि पुलिस में एक एफआईआर भी दर्ज कराएंगे कि देश के गृहमंत्री लापता हैं।

उन्हें सदन में आना चाहिए। उन्हें किस बात का डर है? 12 साल से आपने देश को डर के साये में रखा है, अब आप क्यों डर रहे हैं? आपके अंडर ईडी, सीबीआई इनकम टैक्स डिपार्टमेंट, आईटी सेल और साइबर फोर्स जैसी एजेंसियां काम कर रही हैं, फिर भी आप डरे हुए हैं। वहीं राम मंदिर चढ़ावा चोरी मामले में संतों को लेकर छिड़े विवाद के बीच राउत ने कहा, हमने कब कहा कि घोटाले में संत शामिल थे? हमने कहा था कि बीजेपी के नेताओं ने घोटाला किया है, बीजेपी नेताओं को हमने कभी साधु संत नहीं कहा। उनकी तुलना संतों से कभी नहीं की जा सकती। संतों की तपस्या अलग होती है, उनके जीवन का स्तर बिल्कुल अलग होता है, क्या चंपत राय संत कहे जाएंगे? क्या अनिल मिश्रा संत हैं? क्या गोपाल राव संत हैं? नहीं। ये बीजेपी नेता हैं।

वाह रे सरकारी व्यवस्था! सालों से फाइलों में कैद एसटीपी लिंक रोड

» पीडब्ल्यूडी की लापरवाही से हर बारिश में डूबता है पूरा इलाका

» शिकायतें बहुत की पर नहीं हुआ स्थायी समाधान

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। राजधानी के नगर निगम वार्ड संख्या-14 (भरवरा मल्हौर) में अमिटी यूनिवर्सिटी गेट नंबर-2 से एसटीपी चौराहा लिंक रोड तक का अधूरा निर्माण और बदहाल जलनिकासी व्यवस्था अब लोक निर्माण विभाग की कार्यप्रणाली पर गंभीर सवाल खड़े कर रही है। दस्तावेज बताते हैं कि 24 से लेकर अगस्त 26 तक लगातार शिकायतें और पत्राचार होते रहे, लेकिन विभाग स्थायी समाधान देने में विफल रहा।

नतीजा यह है कि आज भी कुछ घंटों की बारिश के बाद सड़कें तालाब बन जाती हैं और हजारों लोगों को भारी परेशानी झेलनी पड़ती है। 11 फरवरी 24 को वार्ड की समस्याओं को लेकर मुख्य अभियंता, पीडब्ल्यूडी (मध्य क्षेत्र) को हस्तलिखित शिकायत भेजी गई थी। इसमें साफ लिखा गया था कि तालाब तक नाला निर्माण अधूरा है। कई स्थानों पर आरसीसी सड़क आधी बनी हुई है। सड़क किनारे पटरी नहीं भरी गई। अमर रोड का निर्माण अधूरा है। कॉलोनियों तक जलनिकासी की उचित व्यवस्था नहीं है। इसके बाद 11 मार्च 24 को वार्ड-14 की पार्षद ममता रावत ने भी मुख्य अभियंता, लोक निर्माण विभाग , मध्य क्षेत्र को आधिकारिक पत्र लिखकर इन्हीं कमियों की ओर ध्यान आकर्षित किया।

जल्द सबको ठीक करायेंगे

जिन घरों में पानी भर रहा है वहाँ नालिया नहीं है जिसके लिए नगर निगम को पत्र भेजा जा चुका है। लेकिन नालियां है पर वह ऐसे ही हैं। अब ऐसी नालियां बने जिससे जल निकासी हो सके । वहीं जो डामर रोड बनायी गई है उसको भी जल्द ही ठीक करवाया जाएगा। उसकों सीसी रोड में बनाया जाएगा। एस्टीमेट बनाया गया जिसके बाद जितने में डामर रोड बनाई गई थी उतने में इसको पूरा कराया जाएगा।

लोक निर्माण विभाग अधिशासी अभियंता सत्येंद्र नाथ

राज्य के अधिकार और पहचान लौटाकर रहेंगे : उमर अब्दुल्ला

» 370 हटाए जाने के 7 साल पूरे होने पर बोले सीएम

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

श्रीनगर। मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने बुधवार को फिर दोहराया कि जम्मू-कश्मीर नेशनल कॉन्फ्रेंस उन प्रशासनिक और संवैधानिक बदलावों को पलटने के लिए प्रतिबद्ध है, जिन्होंने इस क्षेत्र के विशेष अधिकारों को खत्म कर दिया था और इसकी अनूठी पहचान को खतरे में डाल दिया था।

अगस्त 19 मेंकेंद्र सरकार ने भारतीय संविधान के अनुच्छेद 37० को रद्द कर दिया। इस फ़ैसले की सातवीं बरसी पर, सीएम अब्दुल्ला ने एक अमेरिकी कवि की कविता 'स्टॉपिंग बाय वुड्स ऑन ए स्नोई इवनिंग' की कुछ लाइनें लिखीं। 7 साल हो गए, न हम भूले हैं और न ही हमने समझौता किया है।

गिल की अगुवाई में श्रीलंका पहुंची भारतीय टीम

» साई सुदर्शन अभी भी सीओई में, फिटनेस पर 3-4 दिन में होगा फैसला

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

बंगलूरू। भारतीय टेस्ट कप्तान शुभमन गिल की अगुआई में टीम इंडिया मंगलवार को दो टेस्ट मैचों की सीरीज के लिए श्रीलंका पहुंच गई। हालांकि,साई सुदर्शन अभी टीम के साथ नहीं गए हैं। वह पैर की अंगुली की चोट से उबर रहे हैं और फिलहाल बंगलूरू स्थित बीसीसीआई के सीओई में मेडिकल स्टाफ की निगरानी में रिहैब कर रहे हैं। सुदर्शन रोजाना एक घंटे से अधिक समय तक नेट्स में बल्लेबाजी कर रहे हैं। उनकी रिकवरी पर लगातार नजर रखी जा रही है और अगले तीन से चार दिनों में उनकी फिटनेस का दोबारा आकलन किया जाएगा।

इसके बाद ही तय होगा कि वह श्रीलंका जाकर टीम से जुड़ पाएंगे या नहीं। बीसीसीआई मेडिकल टीम सुदर्शन की वापसी को लेकर कोई जोखिम नहीं लेना चाहती। हाल के दिनों में हर्षित राणा की जल्द वापसी के बाद दोबारा चोटिल होने का मामला सामने आया था। साई सुदर्शन को हाल ही में भारत-ए के श्रीलंका दौरे के दौरान पैर की अंगुली में चोट लगी थी। भारतीय टीम सात अगस्त से कोलंबो के नॉनडिस्क्रिप्ट्स क्रिकेट क्लब मैदान पर तीन दिवसीय अभ्यास मैच खेलेगी। इसके बाद टीम 15 अगस्त से गॉल में पहला टेस्ट खेलेगी, जबकि दूसरा टेस्ट 23 अगस्त से कोलंबो में खेला जाएगा। यदि सुदर्शन फिट घोषित होते हैं, तो उनके दूसरे टेस्ट से पहले टीम से जुड़ने की संभावना है।

भारत दौरे के लिए महिला ऑस्ट्रेलिया ए का दस्ता तैयार

मेलबर्न। क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया ने भारत दौरे के लिए 15 सदस्यीय ऑस्ट्रेलिया ए महिला टीम की घोषणा कर दी है। टीम में तेज गेंदबाज टायला व्लामिन्क और डार्सी ब्राउन की वापसी सबसे बड़ा आकर्षण है। दोनों खिलाड़ी लंबे समय बाद प्रतिस्पर्धी क्रिकेट में वापसी करेंगी और भारत दौरे पर अपनी छाप छोड़ने के लिए तैयार हैं। 27 वर्षीय टायला व्लामिन्क पिछले टी20 विश्व कप के दौरान कंधे की चोट के कारण टीम से बाहर हो गई थीं। अब वह पूरी तरह फिट हैं और भारत के खिलाफ सीमित ओवरों की सीरीज में अपनी लय हासिल करने की कोशिश करेंगी। वहीं, 23 वर्षीय तेज गेंदबाज डार्सी ब्राउन पिछले टी20 विश्व कप की टीम में जगह नहीं बना सकी थीं, लेकिन ऑस्ट्रेलिया ए टीम में चयन के बाद उन्हें खुद को साबित करने का अच्छा मौका मिला है। ऑस्ट्रेलिया ए टीम का भारत दौरा करीब तीन सप्ताह तक चलेगा। इस दौरान टीम न्यू चंडीगढ़ में तीन टी20 मैच खेलेगी। इसके बाद मोहाली में तीन एकदिवसीय मुकाबले होंगे, जबकि धर्मशाला में एक चार दिवसीय मैच भी खेला जाएगा।

तीसरे दिन भी यूपी विस सत्र हंगामे की भेट चढ़ा

विपक्ष ने सरकार को घेरा, विधानसभा की कार्यवाही अनिश्चितकाल के लिए स्थगित

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। विधानमंडल के मानसून सत्र में बुधवार को भी हंगामा और नारेबाजी जारी रही। मंगलवार को उत्तर प्रदेश सरकार ने 59 हजार करोड़ का अनुपूरक बजट सदन में पेश किया था। इस दौरान विधानसभा में लगातार हंगामा होता रहा। बुधवार को भी सदन में हंगामा जारी रहा इसके कारण दो बार कार्यवाही को स्थगित करना पड़ा। यूपी विधानमंडल में हंगामे के कारण विधानसभा की कार्यवाही को अनिश्चितकाल के लिए स्थगित कर दी गई।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मीडिया को संबोधित करते हुए कहा कि सदन की कार्यवाही के दौरान विपक्ष का लोकतंत्र और विकास विरोधी चेहरा सामने आया है। इन लोगों का आचरण शर्मनाक है। ये विकास विरोधी हैं। यूपी विधानमंडल के मानसून सत्र के तीसरे दिन मंगलवार को पेश किए गए अनुपूरक बजट पर हंगामे के चलते चर्चा नहीं हो सकी। सदन की कार्यवाही को दो बार स्थगित करना पड़ा। इसके बाद सदन की कार्यवाही फिर शुरू हुई पर लगातार हंगामा होता रहा और हंगामे के बीच ही कई महत्वपूर्ण विधेयक पेश किए गए। वहीं, हंगामा न रुकते देख विधानसभा की कार्यवाही अनिश्चितकाल के लिए स्थगित कर दी गई।

यूपी विधानसभा में लगातार हंगामा होता रहा। इस बीच कई महत्वपूर्ण विधेयक बिना चर्चा के ही पास हो गए। इसके बाद संसदीय कार्यमंत्री सुरेश खन्ना ने सदन को अनिश्चितकाल के लिए स्थगित करने की मांग की जिस पर सभापति ने सहमति दे दी।

शून्य काल में चर्चा के दौरान जमकर हंगामा

यूपी विधानसभा में कार्यवाही के स्थगन के बाद सदन की कार्यवाही फिर शुरू हुई। पेपर लीक के मुद्दे पर शून्य काल में चर्चा के दौरान जमकर हंगामा हुआ। वहीं, सरकार के जवाब से असंतुष्ट विपक्ष ने विधान परिषद से बहिर्गमन कर दिया।

सपा के हंगामे के बीच विस में रखी गई संभल हिंसा की रिपोर्ट

उत्तर प्रदेश विधानसभा की 1 बजे कार्यवाही शुरू होते ही समाजवादी पार्टी के विधायकों ने एक बार फिर सदन में प्रदर्शन शुरू कर दिया। सपा विधायक वेल में पहुंचकर नारेबाजी करने लगे। हंगामे के बीच संसदीय कार्य मंत्री सुरेश खन्ना ने संभल हिंसा मामले की जांच रिपोर्ट विधानसभा के पटल पर रखी इसी दौरान सरकार ने वर्ष 16 के मदरसा शिक्षकों के वेतन भुगतान संबंधी विधेयक को वापस लेने की प्रक्रिया भी शुरू की।

गृहमंत्री के बयान पर अड़े नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। संसद में जारी गतिरोध को खत्म करने की कोशिशों के बीच केंद्रीय संसदीय कार्य मंत्री किरन रिजिजू ने नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी और कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा से करीब 50 मिनट तक मुलाकात की। सूत्रों के अनुसार, इस बैठक में संसद की कार्यवाही सामान्य करने और दोनों पक्षों के बीच सहमति बनाने के लिए कई मुद्दों पर विस्तार से चर्चा हुई।

राहुल गांधी ने किरेन रिजिजू से साफ कहा कि विपक्ष चाहता है कि दिल्ली पुलिस द्वारा प्रदर्शनकारियों पर किए गए कथित लाठीचार्ज के मुद्दे पर संसद में चर्चा कराई जाए। उन्होंने यह भी मांग की कि इस मामले में केंद्रीय गृह मंत्री सदन में आकर अपना बयान दें। विपक्ष का कहना है कि इस मुद्दे पर सरकार को संसद के भीतर जवाब देना चाहिए। बैठक के दौरान सरकार की ओर से परिसीमन और एफआरसीए बिल पर भी चर्चा की गई। सूत्रों के अनुसार, केंद्रीय मंत्री किरन रिजिजू ने राहुल गांधी और प्रियंका गांधी से इन दोनों विधेयकों पर सहयोग और समर्थन देने का आग्रह किया। सरकार चाहती है कि इन महत्वपूर्ण विधेयकों पर विपक्ष के साथ बातचीत के जरिए सहमति बनाई जाए. हालांकि, सूत्रों का कहना है कि इन मुद्दों पर राहुल गांधी की ओर से अभी अंतिम प्रतिक्रिया नहीं दी गई है। माना जा रहा है कि गुरुवार तक इस संबंध में स्थिति और स्पष्ट हो सकती है।

परिसीमन विधेयक को लेकर बातचीत

सूत्रों के अनुसार, केंद्र सरकार परिसीमन विधेयक को लेकर केवल कांग्रेस ही नहीं, बल्कि दूसरे राजनीतिक दलों के साथ भी लगातार बातचीत कर रही है. सरकार का प्रयास है कि इस विधेयक पर व्यापक सहमति बन सके और संसद में इसे आगे बढ़ाने में किसी तरह की बाधा न आए। फिलहाल संसद में जारी गतिरोध को खत्म करने के लिए सरकार और विपक्ष के बीच बातचीत का दौर जारी है. आने वाले दिनों में दोनों पक्षों के रुख के आधार पर यह तय होगा कि संसद की कार्यवाही सामान्य रूप से चल पाएगी या नहीं।

संसद से सड़क तक विपक्ष का हल्ला बोल

कांग्रेस समेत सभी दलों ने शाह के खिलाफ निकाला विरोध मार्च

» मल्लिकार्जुन खरगे ने पूछा- सदन में क्यों नहीं गृहमंत्री

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। बुधवार को विपक्ष के सांसदों ने संसद परिसर में विरोध मार्च निकाला। उन्होंने छात्रों के खिलाफ कथित पुलिस कार्रवाई पर गृह मंत्री अमित शाह से बयान, राम मंदिर चंदे में कथित गड़बड़ियों पर चर्चा और जम्मू-कश्मीर का राज्य का दर्जा बहाल करने की मांग की।

लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी और कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा की अगुवाई में सांसदों ने प्रेरणा स्थल पर महात्मा गांधी की प्रतिमा से मकर द्वार तक मार्च किया। इस दौरान उन्होंने सरकार के खिलाफ नारे लगाए और प्लेकार्ड भी उठाए। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे भी विरोध प्रदर्शन में शामिल हुए और संसद से शाह की गैर-मौजूदगी पर सवाल उठाते हुए मांग की कि वे विपक्ष द्वारा उठाए गए मुद्दों पर बात करें। खड़गे ने पत्रकारों से कहा कि वे सदन में क्यों नहीं आ रहे हैं? वे संसद का अपमान कर रहे हैं। कई दिन हो गए हैं, लेकिन वे सदन में नहीं आना चाहते। आकर बयान देने में क्या दिक्कत है? विरोध कर रहे सांसदों ने मांग की कि शाह संसद के दोनों सदनों में पिछले महीने पेपर लीक मामले से जुड़े प्रदर्शनों के दौरान छात्रों के खिलाफ कथित पुलिस ज्यादती पर बयान दें।

राम मंदिर से लेकर धारा 370तक पर भाजपा को घेरा

विपक्ष के कई सदस्यों ने अयोध्या में राम मंदिर के लिए दिए गए दान के दुरुपयोग के आरोप भी लगाए। जम्मू-कश्मीर के सांसदों ने केंद्र शासित प्रदेश का राज्य का दर्जा बहाल करने की मांग की, यह विरोध प्रदर्शन अनुच्छेद 370 को हटाए जाने की सातवीं बरसी के मौके पर हुआ। सांसदों ने अमित शाह जवाब दो जैसे नारे लगाए और सरकार की आलोचना करते हुए पोस्टर दिखाए। मंदिर के दान के कथित दुरुपयोग के खिलाफ़ सांकेतिक विरोध के तौर पर उन्होंने मकर द्वार की सीढ़ियों के पास दान-पात्र भी रखे, और कुछ सांसदों ने उनमें नकद पैसे भी डाले।

राहुल गांधी प्रियंका व डिंपल भी उतरे

इस विरोध प्रदर्शन में विपक्ष के कई नेता शामिल हुए, जिनमें राहुल गांधी, प्रियंका गांधी वाड्रा, समाजवादी पार्टी की सांसद डिंपल यादव और धर्मेंद्र यादव, टीएमसी नेता सागरिका घोष और महुआ मोइत्रा, एनसीपी (एसपी) की सांसद सुप्रिया सुले, जेएमएम की महुआ माजी और आरएसपी के एनके प्रेमचंद्रन शामिल थे।

3 दिन में जुकरबर्ग माफी मांगे

पीएम मोदी के वीडियो बैन पर संसदीय समिति की चेतावनी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। इलेक्ट्रॉनिक्स एवं इंफॉर्मेशन टैक्नोलॉजी मिनिस्ट्री की संसदीय समिति ने मेटा के सीईओ को एक पत्र भेजा है जिसमें उन्होंने मार्क जुकरबर्ग को 3 दिन में माफी मांगने के लिए कहा है। ये पत्र 3 अगस्त की संसदीय स्थायी समिति की बैठक के संदर्भ में लिखा गया।

मामला प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के छात्रों के नाम वीडियो संदेश को फेसबुक से हटाने से जुड़ा है। लेटर में लिखा है कि अगर जुकरबर्ग माफी नहीं मांगेंगे तो उनके खिलाफ कार्रवाई होगी। अगर मार्क जुकरबर्ग माफी नहीं मांगेंगे तो आईटी अधिनियम की धारा 79(3) के तहत मेटा का सेफ हार्बर वापस लेने की प्रक्रिया शुरू की जा सकती है। कंपनी को मिली कानूनी सुरक्षा समाप्त करने पर भी विचार होगा। मार्क जुकरबर्ग के खिलाफ 'प्रकाशक' के रूप में कार्रवाई की बात भी दोहराई गई।

रांची : छात्र नेता देवेंद्रनाथ महतो ने तोड़ा अनशन

पहले सोनम वांगचुक से वीडियो कॉल पर की बातचीत

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

रांची। झारखंड लोक सेवा आयोग (जेपीएससी), झारखंड कर्मचारी चयन आयोग (जेएसएससी) और कई अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं में कथित गड़बड़ियों के विरोध में भूख हड़ताल पर बैठे देवेंद्र नाथ महतो ने अपना अनशन तोड़ दिया है। उन्होंने सामाजिक कार्यकर्ता सोनम वांगचुक से फोन पर लाइव बातचीत के बाद अपना अनशन तोड़ा।

छात्र नेता देवेंद्र नाथ महतो ने कहा, हम 25 जुलाई से सत्याग्रह कर रहे हैं। मैंने 2 अगस्त से अनिश्चितकालीन भूख हड़ताल शुरू की थी। मैं बहुत ज्यादा थक चुका था और स्थिति गंभीर हो गई थी। यहां 26 साल से पेपर लीक हो रहे हैं। कल डॉक्टर ने चेतावनी दी कि अगर मैंने पानी नहीं पिया तो मुझे अस्पताल में भर्ती करना पड़ेगा। सामाजिक कार्यकर्ता सोनम वांगचुक ने कहा, कृपया थोड़ा पानी पी लीजिए। यह आत्महत्या जैसा कदम है। आपको कुछ समय चाहिए, लेकिन यह 2-3 हफ्ते भी हो सकते हैं। मुझे उम्मीद है कि सरकार इसे समझेगी और सही फैसला लेगी।

दर्दनाक हादसा : तीन कांवड़ियों की मौत

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

गाजियाबाद। दिल्ली-मेरठ एक्सप्रेसवे पर एक भीषण सड़क हादसे में तीन कांवड़ियों की दर्दनाक मौत हो गई। यह घटना भोजपुर थाना क्षेत्र के गांव कलछीना के पास बुधवार सुबह करीब पांच बजे हुई, जब एक अज्ञात वाहन ने बाइक को टक्कर मार दी। इस हादसे में बाइक सवार तीनों शिव भक्त गंभीर रूप से घायल हो गए, जिन्होंने बाद में दम तोड़ दिया।

जानकारी के अनुसार, तीनों कांवड़िये हरियाणा के झज्जर जिले के रहने वाले थे और हरिद्वार की ओर कांवड़ यात्रा पर जा रहे थे। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, एक तेज रफ्तार अज्ञात वाहन ने उनकी बाइक को जोरदार टक्कर मारी, जिससे बाइक सवार तीनों युवक सड़क पर गिर गए और गंभीर चोटें आईं। मौके पर पहुंची पुलिस ने घायलों को तत्काल अस्पताल पहुंचाया, जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने मृतकों की पहचान ज्ञानप्रकाश, राजकुमार और प्रदीप के रूप में की है। तीनों युवक एक ही गांव के निवासी बताए जा रहे हैं। घटना के बाद से मृतकों के परिवारों में शोक की लहर दौड़ गई है। पुलिस ने तीनों शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है और अज्ञात वाहन चालक के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया है। पुलिस वाहन की पहचान और चालक की तलाश में जुटी हुई है।

» वाहन ने बाइक में मारी टक्कर झज्जर से हरिद्वार जा रहे थे

महाराष्ट्र कार्यालय :- 4पीएम न्यूज़ नेटवर्क, 2-डी सिटी मॉल, अंधेरी वेस्ट, मुंबई, महाराष्ट्र - 400053। विधि सलाहकार : मोहम्मद हैदर
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी।
RNI-UPHIN/2015/62233, दूरभाष : 0522- 4078371 | Email : daily4pm@gmail.com | website: www.4pm.co.in |
समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।

स्वामी 4 पीएम न्यूज नेटवर्क्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए
मुद्रक एवं प्रकाशक संजय शर्मा
द्वारा आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से मुद्रित
पता 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से प्रकाशित। संपादक- संजय शर्मा